'विदेह' २६७ म अंक ०१ फरबरी २०१९ (वर्ष १२ मास १३४ अंक २६७)

ऐ अंकमे अछि:-

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

वि दे ह *विदेह Videha বিদেহ* ***http://www.videha.co.in*** *विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal* রিদেহ প্রথম মৌথিনী পাক্ষিক ঙা পত্রিকা 'विदेह' २६७ म अंक ०१ फरबरी २०१९ (वर्ष १२ मास १३४ अंक २६७)

Google समूह Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

मैथिली साहित्यमे साहित्यिक भ्रष्टाचार गह-गहमे पसरल छै जकर विविध तरीका आ विविध रूप छै।

विदेह शुरूआतेसँ पुरस्कारक राजनीतिपर चोट करैत आबि रहल अछि जकरकिछु सार्थक परिणाम आब देखबामे आबि रह ल अछि। कोनो विषयपर नीक जकाँ फोकस

करबाक एकटा नीक तरीका छै जे ओहि विषय केर विशेषांक निकालि दियौ।पुरस्कारक राजनीतिपर चोट करबाक लेल विदेह "साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक"

निकालबाक घोषणा कऽ रहल अछि। मैथिलीमे कोनो विषयक विशेषांक लेल नीक आलेखककमी रहैत अछि आ साहित्यि क भ्रष्टाचार तँ तेहन विषय अछि

जाहिपर कदाचिते कियो कलम चलेता कारण भविष्यमे हुनकर नाम पुरस्कार कटि सकैए तँइ एहि विशेषांकमे देरीभऽ सकै ए। ओना इच्छा हिसाबें काज

भेल तखन फरवरीमे ई प्रकाशित भऽ जाएत आ नहि तँ समय बढ़ियो सकैए। निर्भीक, साहसी आ तथ्यात्मक रूपें अपन बा त राखए बलापाठक, आलोचक,

लेखक सभसँ निच्चा बला विषयपर आलेख आमंत्रित अछि--

1.साहित्य, कला एवं सरकारी अकादमीः-

(क) पुरस्कारक राजनीति

(ख) सरकारी अकादेमीमे पैसबाक गैर-लोकतांत्रिक विधान

(ग) सत्तागुट आ अकादमी केर काजक तौर-तरीका

घ) सरकारी सत्ताक छद्म विरोधमे उपजल तात्कालिक समानांतर सत्ताक कार्यपद्धति (1985सँ एखन धरि)

ङ) अकादेमी पुरस्कारमे पाइ फैक्टरः मिथक वा यथार्थ

2.व्यक्तिगत साहित्य संस्थान आ पुरस्कारक राजनीति

3.प्रकाशन जगतमे पसरल भ्रष्टाचार आ लेखक

4. मैथिलीक छद्म लेखक संगठन आ ओकर पदाधिकारी सभहँक आचरण

5.मैथिली विभागमे पसरल साहित्यिक भ्रष्टाचारक विविध रूपः-

(क) पाठ्यक्रम

(ख) अध्ययन-अध्यापन

(ग) नियुक्ति

6. साहित्यिक पत्रकारिता, रिव्यू, मंच, माला, माइक आ लोकार्पणक खेल-तमाशा

7.लेखक सभहँक जन्म-मरण शताब्दी केर चुनाव , कैलेंडरवाद आ तकरा पाछूक राजनीति

8.दलित एवं लेखिका सभहँक संगे भेद-भाव आ ओकर शोषणक विविध तरीका

पाठकीय

आशीष अनचिन्हार

पछिला किछु समयसँ विदेहपर देवेश झाजीकेँ पढ़ि रहल छी। नीक लागल। आगुओ हुनकर रचनाकेँ पढ़ैत रहब से उम्मेद अछि। अंक २५९ मे संतोष कुमार राय "बटोही" जीक कविता पढ़ि लागल जे भविष्यमे ई बहुत दूर धरि जेता। आगुओ एबाक चाही हिनक रचना

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77

७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111

८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126

९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142

१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

Videha_01_11_2015

१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

Videha_01_12_2015

१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ सँ २५० धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

Videha_15_05_2018

Videha_01_05_2018

Videha_15_04_2018

Videha_01_04_2018

Videha_15_09_2017

Videha_01_09_2017

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]

The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor

Maithili Books can be downloaded from: https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

विदेह सम्मान: *सम्मान-सूची*

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२. गद्य

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र
पण्डिताइन
(लघुकथा)

राघबक मोबाइल केर घंटी बाजि उठलनि।देखैत छथि जटा फ़ोन कऽ रहल छनि। फोन उठा हेलो कहलथिन। ओमहर सँ जोश मे मुदा एक अव्यक्त पीड़ा सँ भरल शब्द: "हर हर महादेब राघब जी। सब समाचार नीक ने?"
राघब: "हर हर महादेब! कहल जाओ। जय महाकाल?"
जटा: "सब किछु चलि रहल अछि। जिनगी जीब रहल छी। काल्हि *हरे कृष्णक* दोसर बरखी छनि। अहाँ सँ बहुत नेह रखैत छलीह।सोचल नौत दऽ दी।"

राघब: ‘‘ओह! दू बरख भऽ गेलनि अनुराधा कँ अहि नश्वर काया कँ त्यागि अनश्वर जगत मे प्रवेश केना! समय कोना दौड़ल चलल जा रहल छैक?’’

जटा: ‘‘हाँ राघब जी। अहाँ कँ की कहू, अहाँ स्वयं विद्वान छी। सब बात बुझैत छियैक। आचार्य मदन सेहो सुतले रहि गेलाह!*बिसरे सभी बारी-बारी*!’’

राघब: ‘‘सही कहैत छी। यएह छैक संसार। लोक जनैत अछि जे ओकरा चलि जएबाक छैक तथापि झूठ-फ़रेब मे, अपन आन मे लागल रहैत अछि। छोड़ू इ बात सब। हम काल्हि अवश्य आबि जाएब।’’ इ कहैत राघब फोन काटि देलथिन।

आब राघब जटा आ अनुराधाक दुनिया मे, ओहि छोट सन संसारक इतिहास मे चल गेलाह। समयजेना घूमए लगलनि.....

जटाक जन्म प्रथम पुत्रक रूप मे एक महादरिद्र मैथिल ब्राह्मण परिवार मे भेलनि। नामक अतिरिक्त ओहि परिवार मे कोनो संस्कार ब्राह्मण बला नहि रहैक - ने माता पिताक शिक्षा, ने परिवारक संस्कार, ने गामक नाम आ ने कूलक विचार। जटाक पिता आ माताक बीच एकैसवरखक अंतर रहनि। जटाक पिता भोला प्रचण्ड मूर्ख आ भूमिहीन। लोकक महिस पोसिया रखैत छलाह। पैतीसबरखक भऽ गेल रहथि। सब बेर चानन काजर लगा ललका धोती आ कुरताक सँग पाग दोपट्टा धारण कय सौराठ सभागाछी जाइत छलाह। टुकटुकी लगेने रहैत छलाह जे कोनो कन्यागत ओकरा दिस देखतैक। मुदा सब बेकार। ऊपर सँ मुँह कान सेहो दैवक देल। बज्र कारी चाम, उचगर दाँत, तमाकुल आ पान सँ दाँत मे खईंठी पड़ल, आँखि धसल, रिछ सन पूरा देह मे केस, कान पर विशेष झमटगर ठाढ़ भेल रोआँ, चेड़ा जकाँ हाथ, हाथ मे खुरपी, हाँसू आ कोदारि चलबैत-चलबैत ठेला पड़ल, पैर मे बेमाय फाटल, लेढाएल मोटका धोती सँ महिसक गंध अबैत भोला कोनो रूप सँ ब्राह्मण नहि लगैत छलाह। गामक संस्कार ई जे बिना गारि कँ दू पुरुख निको बात नहि कऽसकैत छल। भोला भला अपवाद कोना रहितथि खूब गारिक प्रयोग करैत छलाह।

लगातार सात बरख सँ भोला तैयार भऽसौराठ सभा शुद्धक समय मे जाइत छलाह आ टकटकी लगेने बैसल रहैत छलाह मुदा दुर्भाग्य ई जे बियाहक बात कँ पुछैत अछि हुनका दिस कोनो कन्यागत देखितो नहि छलनि। अंततः सभा समाप्त भेला पर भोला निराश मोन सँ वापस गाम आबि जाइत छलाह।

एहिबेर भोलाक बूढ़ पिता ठानि लेलाह जे चाहे जेना होइक़ भोलाक बिआह अहि शुद्ध मे अवश्य करा देथिन्ह। कियोक कहि देलकनि जे नीरस झा बहुत नीक दलाल छथि। भोलो सँअधलाह बरक बिआह करा चुकल छथि। मुदा नीरस झा बिना टका कँ कोनो काज नहि करैत छथि। एहिबेर सभा लागब सँ बीस दिन पहिने भोलाक पिता नीरस झा कँ अपन घर बजा अनलाह। बकाएन महिसक शुद्ध दूध मे चाह बना भोलाक माय एक फुलही गिलास मे नीरस कँ आ छोटकी बाटी मे भोलाक पिता कँ देलथिन। नीरस कँ आर की चाही। मोन प्रफुल्लित भऽगेलैक। जाड़क समय मुँह सँ फूकि-फूकि चाह सुरकय लागल। नीरस कँ होइक़ जेना चाह नहि अमृत पिब रहल हो! ओमहर भोलाक पिता आ माय नीरस दिस एक लाचार याचक बनि अशाक किरण जगेने ताकि रहल छलथिन। जखन आधा चाह सुरका गेलैक तऽनीरस बाजि उठल:

नीरस : "हाँ बौकू काका! की कहऽचाहैत रही?"।

बौकू काका: "बौआ, पहिने चाह पिब लीय फेर गप्प करैत छी। अहाँ कोनो आन थोड़े ने छी!"

नीरस चुपचाप चाह पीबय लागल।
चाह सूरकला बाद नीरस फेरो बाजल:
"हाँ बौका का, कहू की कहए चाहैत छी?"
बौकू काका चुपे रहलनि। भोलाक माय आँखि सँ गरम-गरम नोर चुअबैत बजली:
"बौआ नीरस, अहाँ सब सन दियामानी लोक कें अछैते हमर भोलबा कुमारे रहि जाय!"
नीरस: "की कहैत छी काकी, ई एहेन अपाटक अछि जे अपन नाम तक नहि बाजि पबैत अछि। ओहि दिन चौक पर एक घटक नाम पुछि देलकैक। ई बृजबोध चौधरी कें --जीबोध चौधरी कहि देलकैक। ओतय सब आदमी हँसै लगलैक। एकर बिआह कनि झंझट बला चीज़ छैक।"

बौकू काका: "हौ नीरस किछु करह। एकर बिआह हमरा जिबैत भऽजएबाक चाही। सब किछु तऽसुईद मे चलि गेल, आठ कट्ठा बँसबिट्टी आ कलम रहि गेल अछि। तकरे बेचि एकर बिआह करा देबैक। गरीबक मिहनती बेटा छैक। लोकक महिस पोसतैक, खेत बटाई करतैक आ अपन जीबन चला लेतैक।"
बौकू काका कें मुँह सँ ई बात सुनिते देरी नीरस मोने-मोन प्रसन्न भऽ गेल। ओकरा भऽ गेलैक जे आब ओकरा भोलाक बिआहक दलाली मे नीक पाई भेटि जेतैक।
नीरस : "बौकू कक्का, किछु ने किछु तऽकरय पड़त। आहाँकेँ जमीन बिका जाएत तकर दुख हमरा की अहाँ सँ कम हएत। मुदा दोसर कोनो उपाय नहि। खैर! बेटा सँ संपत्ति भऽजाइत छैक, संपति सँ बेटा नहि होइत छैक। की पता भोला कें एहेन संतान विधाता दऽदेथिन जे पाँच दस बिघा जमीन किन दैक, पक्का मकान बना दैक, पैसा सँ घर भरि जाइक।"

भोलाक माय आ पिता मुड़ी गोतने नीरस केर बात सुनैत रहलनि। जतेक अंतिम टुकड़ी जमीन बिका जएबाक दर्द नहि भेलनि ओहि सँ अधिक अहि बातक आश जगलनि जे भोलाक बिआह भऽजएतैक आ ओकर घर बसि जएतैक।

नीरस किछु सोचैत बाजल: "बौकू काका, एक तऽभोला कें कहि दियौक जे ई लोककेँ अपन नाम बृजवोध चैधरी कें बदला भोला चौधरी कहैक। ई शब्द सहज छैक। एहि मे बात नहि लगतैक। आ पाँच सात दिनक भीतर हमरा लेल किछु टका कें ब्योत कऽदिय जे हम बगलक गामक छेदी झा कें जाकऽपहिने सँ दऽअएबैक। छेदी झा अगर हाँ कहि देलक तऽबात पक्का। ओ एहन लोक अछि जे ब्रह्माक लिखल लेख मेटा सकैत अछि।"

ओ कहैत नीरस अपन घर दिस बिदा भेल। बौकू का, भोलाक माए आ भोला कें बिआहक आश जगलैकछ
कोउ काहू मगन
कोउ काहू मगन।

भोलाक परिवार अहिमे मगन जे भोलाक बिआह भऽजेतैक। जमीन तऽ हाथक मैल छैक। नीरस अहि मे मगन जे भोलाक बिआह मे ओकरा नीक दलाली भेट जेतैक।
बौकू काका दोसरे दिन गामक महाजन सँ दू सए टाका अपन कलम कँ नाम पर अगता लए नीरस कँ दऽदेलथिन। नीरस ओहि मे सँ एक सए अपने राखि लेलक आ एक सए छेदी झा कँ दऽअएलैक। छेदी झा जोगार मे लागि गेल। तकैत-तकैत छेदी झा कँ एक कन्यागत एहन भेट गेलैक जकर तेरह बरखक बेटी रहैक। छेदी आ नीरस ओहि कन्यागत कँ समझा बुझा भोला सँ बिआह लेल मना लेलक। ओना पहिने तऽभोलाक बगै देख कन्यागत कनि बिदकि गेलैक मुदा छेदी आ नीरस अपन रचल मायाजाल मे ओकरा फँसा लेलकैक।

अहि तरहे पैतीस बरखक भोलाक बिआह सभा गाछी मे पहिने दिन फाइनल भऽ गेलैक। भोलाक कनिया गोदा गोर अततह मुदा मरगिल्ली जकाँ खियाएल। देह अन्नक मारल रहैक। घर मे भरि पोख अन्न कँ पुछैत अछि कुअन्न तक नहि भेटैक। सोझे साले दुरागमन भेलैक। भोलाक माय अपन मरगिल्ली पुतहु लेल बहुत उदार। दरबज्जा पर पोसिये सही चारि-चारि लगहैर महिस रहैक। दूध दही केर कोनो कमी नहि। गोदाक पूरा नाम रहैक गोदावरी मुदा लोक प्यार सँ गोदा जे कहनाइ शुरू केलकैक से गोदा रहि गेलैक। से जे हो। गोदा सासुर मे भरि पेट भोजन करैत छलि। सासू कहियो कोनो तरहक कमी नहि देलूथिन। सोझे साले गोदाक देह चिक्कन भऽ गेलैक। चाम चमकि उठलैक। बेर सन पयोधरि नीक भोजन आ भोलाक नेहक उत्पात सँ समतोलो सँ नमहर भऽ गेलैक। अचानकअतेक परिवर्तन आबि गेलैक गोदाक शरीर मे जकर कियोक कल्पनो नहि कऽ सकैत छल। गोदा भोलाक दुनिया बदलि देलकैक। बोलीक मधुर तऽगोदा नैहरे सँ छलि। घर मे खूब काज धंधा करथि। सास ससुरक सेवा मे कोनो कमी नहि। भोलाक माए दरबज्जाक काज जेना गोबर सँ चिपड़ी पारब, दरबज्जा निपब, महिसक थान साफ़ करब, अन्न सब फटकब, सुखाएब आदि करथि आ गोदा घर आंगन साफ़ करब, निपब, भानस करब, सासु सँग धान कुटब, दालि दरडब आ पूजा पाठ करथि। दुनू मे कहियो कोनो तरहक फसाद नहि भेलनि। भोला तऽ अपन गोदा कँ सदैव माथ पर रखैत छलाह। समयक चक्की चलैत रहलैक। गोदा सोलहम चढ़ैत गर्भवती भऽगेलीह। नौ मासक बाद एक बेटा भेलनि। भोलाक बेटाक मुँह कान नाक तऽ नीक रहैक मुदा चामक रंग भोलो सँ सियाह। मुँह आयताकार। मुदा भोला, गोदा, भोलाक माता पिता खुशी सँ बताह। एक महिला जतले जिभे बाजि देलकैक ‘‘बच्चा कनि कारी छैक’’। भोलाक माय झट दनि कहि देलथिन: ‘‘रह दियौक, बेटा छैक ने। मुँह कान सोझ छैक ने। घीबक लडडू टेढो नीक। हमर वंश बचि गेल। महादेब खूब कऽ औरदा देथिन आ काया निरोग रहैक। आर की चाही।

बच्चा चूँकि भोलाक माय कलना बाबा सँ मंगने छलीह ताहि ओकर नाम राखल गेलैक मंगेश चौधरी। मंगेश कँ घुरमल घुरमल जटा बला केश रहैक ताहिं गाम घरक लोक जटा कहि सम्बोधित करए लगलैक। मंगेश कतौ बिला गेलैक आ जटा नाम जगजियार भऽ गेलैक।

भोला परिश्रम करैत रहलाह।जटा कें दबाई बीरो लेल नगद टाका के दरकार भेलैक। लोक सब सँ पैंच उधार शुरू भेलैक। आठे मासक बाद गोदाकेँ पुनः गर्भ ठहरि गेलैक। फेरो बेटा भेलैक। हालाँकि तकर छह बरख धरि गोदा कें कोनो सँतान नहि भेलनि। अहि बीच भोलाक पिता अर्थात् बौकू काकाक निधन भऽ गेलनि। भोला पर कर्जा आरो बढि गेलनि। दूनू बेटा जटा आ सत्यव्रत सरकारी बेसिक स्कूल मे जाईत रहल। नहुँ-नहुँ अन्न पानिक दिक्कत शुरू भेलैक कारण भोला लोकक कर्ज अन्न बेचि सधेबाक जोगर लगेने छलाह। अही बीच ककरो सँ पता चललैक जे महर्षि रमेश योगी कान्पुरमे तीन बरख लेल अखण्ड यज्ञ करताह। ताहि लेल ब्राह्मण कुमार चाही। बच्चा सभकेँ रहनाइ खेनाइ मुफ़्त उपर सँ गुरुकुल मे नामो लिखा देल जेतैक। किछु टाका सेहो भेटतै। गोदा भले दरिद्र परिवार सँ छलीह मुदा शिक्षाक प्रति साकांक्ष छलीह। भोला कें कहलथिन: "बुझलौं, अपने सब दिक्कत मे छी। दुनू भाई कें भरि पेट अन्नो ठीक सँ नहि दऽ पबैत छी वस्त्र पोथीक चरचे छोड़ि दियौक। बढियाँ रहत जे दुनूकेँकानपुररमेश जोगी कें आश्रम पठा देबैक। भरि पेट भोजन, देह झाँपक वस्त्र आ पढ़बाक जोगार तऽ भऽ जेतैक। अपन सभक जीवन कटैत रहत।"

भोला बात गंभीर भेल सुनैत रहला आ अंतिम निर्णय इ लेलनि जे जटा आ सत्यव्रत कें दिल्ली पठा देथिन। सएह भेलैक।

जटा आ सत्यव्रत दुनू भाई महर्षि रमेश योगीक आश्रम कानपुर आबि गेल। पहिल बेर शेब देखलक। पहिल बेर पनीर ककरा कहैत छैक से बुझलक। गेरुआ शुभ्र वस्त्र भेटलैक। भोरे स्नान पूजा, वैदिक मन्त्रक समवेत पाठ आ तकर बाद फल आ भरि गिलास छालीयुक्त दूध। दिनमे रोटी, भात, दालि, तरकारी, सलाद,आचार, दही, मिठाई; राति कऽ रोटी, दालि तरकारी। सुतए सँ पहिने दूध।सँस्कृत व्याकरण, वेद पाठ, कर्मकाण्डक शिक्षा विख्यात गुरूक देखरेख मे। दू हजार विद्यार्थी मे दुनू भाई जेना घुलि मिल गेल। वेद पाठ सँ कंठ खुजि गेलैक। व्याकरणक सूत्र जिह्वा पर चढ़ि गेलैक। जखन एक बरख मे गाम गेल तऽ गोदा अपन दुनू ब्राह्मण कुमारक मुखाकृत देखि अचम्भित भऽ गेलीह। सासु तुरत हिंग, सौंस मिरचाई आ नोन झड़का दुनूपौत्रक नजरि उतारि लेलनि। डर इ रहनि जे कखनोकल अपनो लोकक नजरि लागि जाइत छैक!

नित्य वेद पाठ केलाह सँ दुनू भाई केर कंठ फूटि गेलैक। स्वरक सन्धान नीक भऽगेलैक। गेयता प्रखर भऽगेलैक। दु बरख मे जेना परिपक्व भऽगेल होइक। दुनू भाई आब क्रमशः बारह आ दस बरखक भऽगेल। सब किछु नीक रहैक। इमहर गोदा कें फेरो एक बेटा आ एक बेटी भऽगेलनि।

एकाएक रमेश योगीक आश्रम मे यज्ञ आ पढ़ाई बन्द भऽगेलैक। आब की हो? ओहि मे अधिकांश विद्यार्थी मिथिला आ उत्तराखंड सँ अति निर्धन परिवार सँ रहैक। माता पिता लग कोनो उपाय नहि। कियोक कोनो फैक्ट्री तऽ कियोक कोनो आन मजदूरी शुरू केलक। किछु नीक विद्यार्थी सबहक नामांकन कानपुर आ अगल बगल केर सँस्कृत विद्यालय (महाविद्यालय) मे भऽगेलैक। ओहने विद्यार्थीक हेंज मे जटा आ सत्यव्रत छल। मिथिलेक एक गुरुजी अपन प्रभुत्व सँ दुनूक नामांकन एक सँस्कृत विद्यालय मे करा देलथिन। ओहि विद्यालय

मे छात्र सभकेँ दुनू साँझ भरि पेट रोटी दालि भोजन भेटैक। खोराकी अगल बगल केँ सेठ साहूकार सब धर्मक नाम पर दान मे दैक। कहियो काल तरकारी आ खीर मिठाई सेहो विशेष लोकक कृपा सँ भेट जाइक। लोक सभ विद्यालय केँ छात्र सभकेँ ब्राह्मण भोजन,पूजा पाठ लेल सेहो बजबैक। अहि मे नीक निकुत भोजनक अलावा वस्त्र, वर्तन आ नगद सेहो हासिल भऽजाइक। ई दुनू भाई अपन पैसा बचा माय केँ पठाबय लागल। कर्जा सँ कनि आफ़ियत होमय लगलैक। दुनू भाई पढ़ैत रहल। पढ़ाई मे नीक करैत रहल। जटा कनि मुँहक जोर छल आ सत्यव्रत कनि मृदुभाषी मुदा गम्भीर आ चुस्त चालाक लोक। देखैत-देखैत जटा अठारह बरखक भऽगेलैक। ओकर दाई अर्थात भोलाक माय जिबैत छलथिन। एकदिन भोला सँ अरि गेलथिन: "हौ बौआ, बाप तऽपोता सबहक उपनैनो नहि देख सकलथुन, हमरा कम सँ कम जटा केँ बिआह करा ओकर कनिया देखा दएह! मरलाउत्तर तोहर पिता भेटता तऽकहि देबनि जे एहन अछि अहाँक पोताक कनिया!" ई कहैत ओहि बूढ़ीक धसल आँखि सँ नोर माटि पर टप-टप खसए लगलैक।

भोला तुरत अनमोल मास्टर लग अंतर्देशी लेने पहुँच गेलाह। बजलाह, "माहटर साहेब, हमर माय आई एक कचोटक बात बाजि देलक। ऊपर सँ ओकर नोर थमहक नामे नहि लऽ रहल अछि। कहैत अछि जे आब बहुत दिन नहि जीत। मरए सँ पहिने जटाक कनिया देखऽचाहैत अछि। कनि अहाँ एक चिट्ठी मे सब बात जटा केँ लिख ओकरा जनतब दऽदियौक। "
भोलाक हाथ सँ अंतर्देशी अपन हाथ मे लैत अनमोल मास्टर सब बात चिट्ठी मे जटा लेल लिख देलथिन। चिट्ठी भेटला पर जटा बिआह लेल तैयार भऽगेलैक। तीन मासक भीतर जटाक बिआह अपना सँ दू बरख छोट लड़की सँ भऽगेलैक। सोझे साले दुरागमन सेहो भऽगेलैक।

जटाक कनियाक नाम रहैक अनुराधा। लंबाई मे जटा सँ लगभग बराबर। रंग सामरि, देह गदरायल। नागिन सन लट, डोका जकाँ आँखि, छरगर नोकगर पतरगर नाक, गस्सल-गस्सल छोट-छोट दूध जकाँ चमकैत दाँत, वक्षक वयस झाने कनिक अधिके उभार, नारिकेर तेल सँ गूथल जुड़ा, रंग बिरंगी नुआ मे अधकटी आंगी आ कखनोकाल पारदर्शी आंगी सँ छटकैत ओकर कसल पयोधरि देखार लगैक एना जेना सब बंधन तोड़ि बाहर आबि जेतैक! जटातऽअपन रसगर कनियाक काया केर प्रेम आ ओकर नेह मे बताह भऽगेल। कखनो ओ अनुराधा केँ छोड़ि कतौ जएबाक नामे नहि लैत छल। मासे दिन पर कानपुर सँ गाम आबि जाइत छल।

अनुराधा एक नंबर के खेलाड़ि। रंग रभसक बात आ विधान जटा सँ अधिक बुझैत छलि। कतेक क्रिया प्रतिक्रिया आ खेलक गूढ़ नियम आ प्रयोग बुझल रहैक अनुराधा केँ। बिआहक बाद ओहि मे उत्तरोत्तर वृद्धि होइत गेलैक। परिणाम ई भेलैक जे अनुराधा बिना जटा केँ कानपुर मे मोने नहि लगैक। जटा आचार्यक अंतिम परीक्षाक बाद अनुराधा केँ कानपुर अनबाक उपक्रम करए लागल। पंडिताई सँ नीक कमाई भऽजाइत रहैक। तांहि ई चिंता नहि रहैक जे अनुराधा केँ कोना रखते की खेतैक, की खुएतैक। अनुराधा ओना तऽकनिया बनि आयलि छलि मुदा जेठ आ कमौआ बेटाक पत्नीक होबाक़ कारणे लजवन्ती सासु गोदाक लेल सासुओ सँ पैघ बनि गेल छलि। सबदिन जटा एक चिट्ठी अनुराधा केँ लिखैक आ सबराति अनुराधा ओकर

उत्तर लिखैक। बेचारा भोला सबदिन डाकघर चिट्ठी ख़सेबा लेल अनुराधाक चरबाह जकाँ जाइत छलाह आ डाकिया हुनकाजटाक चिट्ठी थमहा दैत रहनि।
अहि बेर पितृपक्ष मे जे जटा गाम अएलैक से अनुराधा कें गर्भ ठहरि गेलैक। जखन जटाकानपुर गेल तऽडेढ़ मासक बाद ओकरा अनुराधाक चिट्ठी सँ ई जानकारी भेटलैक। अनुराधा चाहैत छलि जे ओकर बच्चा कानपुर मे होइक़ आ जखन बच्चा होइक़ तऽजटा ओकरा बगल मे रहैक। मुदा विधनाक विधान किछु आरे लिखल रहैक।

एक दिन घनघोर अन्हरिया राति मे कोनो उपद्रवी लोक एक विद्यार्थीक हत्या कऽदेलकैक। आब की हो? पुलिस पर दबाब पड़लैक जे कोनो घराने खुनिया अपराधी कें चौबीस घंटाक भीतर जेहेल मे डालि देबाक छैक।

जटाक मुँहजोर भेनाइ काल भऽगेलैक। ऊपर सँ विद्यालय मे गुरुजी सबमे गुटबाजी चलैत रहैक। जटा जाहि गुरुक गुट मे छल से गुरुजी कतौ बाहर गेल छलाह आ हुनकर प्रतिद्वंद्वी अहि बातक लाभ उठबैत जटाक नाम पुलिस मे लिखा देलकैक। फेर की अर्ध रात्रि मे पुलिस जटा कें हिरासत मे लऽलेलकैक। भरि राति थाना मे यातना दैत रहलैक। लाठी, बन्दूकक कुंडा आ घुसा सँ पीटैत रहलैक। नाना तरहक यातना। थर्ड डिग्रीक सब यातनाक प्रयोग पुलिस जटा पर तेना केलकैक जेना जटा बहुत कुख्यात आतंकवादी अथवा क्रिमिनल हो। जटा दैहिक आ मानशिक यातना सं टूटी गेल। अहि यातना सँ मृत्युदण्ड नीक इ सोचैत अंततः जटा अपन जानक चिन्ता मे ई गछि लेलकैक जे वएह खूनी छैक। वएह ओहि विद्यार्थी कें मारलकैक। सब ओकरे प्लोटिंग रहैक। पुलिस कें भेलैक जे ओकरा बहुत पैघ कामयावी हाथ लागि गेलैक। सब बात कागत पर लिखा भोला सँ हस्ताक्षर लऽ लेलकैक। दोसरे दिन पुलिस ओकरा हाजत मे लऽगेलैक। मजिस्ट्रेट लग सेहो भोला पुलिस केर भय सँ अपन गुनाह स्वीकार कऽ लेलकैक।प्रजातंत्रक अमानवीय तंत्र मे एक निर्दोष दोषी बनि गेलैक आ दोषी खुल्ला सांढ जकाँ घुमैत रहलैक!
जखन अनुराधा कें पता लगलैक तऽबेचारी बेहोश भऽ गेलि। घर मे मातम वातावरण भऽगेलैक। अनुराधा छलि पुरखाहि। हिम्मत रखलक। क़मर कसि लेलक। निर्णय लेलक जे कानपुर जा अपन पति कें निर्दोष साबित करत। लोक मनो केलकैक मुदा अपन निर्णय पर रणचण्डी जकाँ ओ दृढ़ छलि। दोसरे दिन बिना कोनो आरक्षण कें जनरल टिकट सँ अनुराधा अपन एक पन्द्रहवर्षीय देओर सँग कानपुर लेल रेलगाड़ी मे बैस रहलि। अनुराधाक माथ पर एक दैविक आभा छलकि रहल छलैक।

अनुराधाकानपुर आबि अपन देओर सत्यव्रत सँग जटाक निर्दोष होमाक लड़ाई लड़ऽलागलि। ई दुनू देओर भाउज लेल महाभारतक धर्म युद्ध सँ कम नहि छलैक। छह मास जेहेल मे रहलाक बाद जटा जमानत पर बाहर आबि गेल। अहि बीच कानपुर मे अनुराधा एक सुन्दर सन पुत्रीक जन्म देलकैक। जटा जेहेल सँ बाहर अबिते मातर बताह जकाँ करऽलागल। अनुराधा यद्यपि विचलित नहि भेलि। लागलि रहल। सत्यव्रत पढ़ाई आ धनार्जन एकै सङ्गे करैत रहल। समयक सुई घुमैत रहलैक। जेना अन्हारक बाद इजोत होइत छैक

तहिना एहन समय एलैक जे असली खूनी पकड़ा गेलैक आ जटा सकुशल अहि केश सँ मुक्त भऽगेल। मुक्त भेलाक़ बाद आचार्यक परीक्षा पास केलक।

एक दिन एक नव मंदिर केर भगवानक प्राण प्रतिष्ठा मे एक गुरुजी सँग जटा सहायक पण्डित बनि कर्मकाण्ड करबा हेतु गेल। मनोयोगपूर्वक सब काजक सँचालन मे गुरुजी कँ मदति केलकनि। गुरुजी बहुत प्रभावित भेलाह। बाद मे जटा कँ ओही मन्दिरक मुख्य पुजारी बना देलथिन। जटा मंदिर मे पूजा पाठ मे लीन भऽ गेल।

एकबेर उज्जैनक महाकाल मंदिर गेल छल जटा। ओतय केर छटा, भस्म आरती, पूजाक पद्धति जेना ओकर मोन मे बसि गेलैक। महाकालक अनन्य भक्त भऽगेल जटा। अनन्त बेर अपन यजमान सबहक पूजा पाठ आ अन्य तरहक सँकल्प ओहि प्रांगण मे करोलक। नितहिं जटा साँझ मे भाँगक गोला खाइत छल। अपन मन्दिर केर प्रस्तर मूर्ति कँ नीक सँ सजबैत छल। नीक करैत छल।मन्दिरक गर्भगृह मे बेरु पहर शिवलिंग लग कतेक काल सुतल रहैत छल। शिवलिंग सँग एना लगैत छलैक जेना जटा जीवित मनुख सँग वार्तालाप करैत हो! लोक कँ आस्था नहुँ नहुँ जटा दिस बढ़ल गेलैक। अहि मंदिर पर अबैत देरी जटा नामक व्यक्ति समाप्त भऽगेल आ महाकाल पण्डित शाश्वत भऽ गेल। समस्त क्षेत्र मे लोक ओकरा महाकाल पण्डित जी कहि सँबोधित करैक। ई क्षेत्र बनिया लोकक रहैक तांहि जटाक भाव कनि अधिक भऽगेलैक। महिला सबमे जटाक क्रेज कनिक अधिके रहैक।

एक महिला तऽअतेक प्रभावित भऽगेलैक जे जटाक पत्नी अनुराधा कँ ई शंका होमय लगलैक जे जटा आ ओहि महिलाक बीच किछु ने किछु बात जरूर छैक। किछु लोकक जे अपना आपकँ प्रत्यक्षदर्शी बैतबैत छल केर दावा रहैक जे मंदिर के भीतर पाछा बला घर मे अन्हार मे ओहि महिला सँग जटा किछु करैत रहैक। सत्य की रहैक से रामहि जानथि मुदा एहि सब बात सँ अनुराधा कनि अधिके साकांक्ष भऽगेलि। जटा पर चौकसी बढ़ि गेलैक। जटाक भाई आब मुम्बई चलि गेलैक। ओहो मुहगर लोक रहैक। वेदक उच्चारण बढ़ियाँ रहैक। एक मंदिर अपने सँ बना ओकर मठाधीश भऽगेल। यजमान सेहो नीक सँख्या मे बना लेलक। जीवन चलैत रहलैक। जटा जखने खुनिया केश सँ बरी भऽगेल सत्यूव्यक विवाह सेहो भोला अर्थात ओकर पिता करा देलथिन। अंतिम निर्णय यद्यपि एहिबेर जटाक रहैक।

अनुराधा आब दोपहर मे जटा लग बैसय लागलि। ओ महिला जे जटा पर लाइन मारय सेहो आब कनि डरे मे रहैक।
जटा पाँच भाई भऽगेल। जटाक अंतिम भाई ओकर बेटी आ बड़का बेटा सँ सेहो छोट रहैक। अहि बात सँ अनुराधा अपन सासु ससुर सँ तमसाएल रहैत छलि मुदा की कऽसकैत छलि?

सत्यव्रत छोड़ि सब भाई जटा लग आबि गेलैक। एक बहिनक बिआह सेहो भऽगेलैक।गाम पर जटा आ सत्यव्रत दुनू भाई मिल कऽ पक्का घर बना लेलक, पाँच छह बीघा जमीन किन लेलक। आर्थिक स्थिति नीक भऽगेलैक।

कानपुर मे एक बिकट समस्या - अतय पंडिताई वृत्ति मे लागल मैथिल ब्राह्मण सब यजमानक डरे या तऽमाछ माउस नहि खाइत छथि अथवा चोरा नुका कऽखाइत छथि। कानपुरक लोक, विशेष रूप सँ बनिया, माड़वारी, पंजाबी आदि यएह सोचैत अछि जे पण्डित कहीं मांसाहारी भेलैक अछि! पण्डित छथि तऽशाकाहारी हेबे करताह। आ अहि सोच मे मारल जाइत छथि पण्डित कर्म मे सँलग्न मिथिलाक कर्मकाण्डी।
बेचारा जटा आ ओकर कनिया दुनू प्राणी एक नंबर केर माछगिद्ध मुदा अपना घर मे नहि खा सकैत छल आ ने बना सकैत छल। जोगार ई रहैक जे एक आदमी जे ओकर दूरक सँबंधी रहैक ओ अपन घर मे बनाबैक आ दस बजे राति कँ बाद जटाक घर पर दऽअबैक। जखन सब सूति रहैक तखन जटाक पूरा परिवार चुपचाप माछ खेलाक बाद रातिये मे कांट कुस बाहर फेंक आबय, घर मे सेंट, अगरबत्ती जड़ा सब गंध (मैथिल सुगन्ध पढ़थि!) समाप्त कऽदैक। ई कनि झंझट बला काज रहैक ताहिं मास दिन मे मुश्किल सँ एक या दू दिन अहि तरहक ब्योत करबैत छल जटा।

अनुराधा छलि ओहि परिवार सँ जतय पुरुख, ताहू मे कमौआ पुरुख कँ बहुत सम्मान भेटैत छैक। सम्मानक परिकल्पना उटपटांग जकाँ रहैत छैक। पुरुखक भोजन सामान्य सदस्य सँ विशिष्ट रहैत छैक। ओकर पहिरब, ओढब, चलब, ओकर ओछायन बिछायन सब किछु मे अंतर। जटा लेल सेहो एहने व्यवस्था अनुराधा केने छलि। घर मे सब लोक लेल रोटी तरकारी अथवा भात दालि एक सामान्य तरकारी बनैक। जटा लेल एक अलग सँ तरकारी अथवा भुजिया अथवा चटनी बनैक। छलिगर दूधक दही अनिवार्य रहैक। जटाक वस्त्र प्रतिदिन धोल जाइक, आयरन होइक़। सब तरहेँ जटा कँ देखला सँ घर मे ओकर विशिष्ट होबाक़ बात स्पष्ट भऽजाइक।

अनुराधा बुधियारि बड़ड। सब दिन जटाक भोजन केलाक बाद जटा बला थाड़ी मे भोजन करैत छलि। जटाअनुराधा लेल सब समान छोड़ि दैत छलैक। बासन मे जे कनि मनि बाँचल रहैत छलैक सेहो अनुराधा अंत मे खा लैत छलि।

अनुराधा कँ एक बातक बहुत तामस रहैक। ओकरा ओहि ठामक लोक - बाल, वृद्ध, स्त्रिगण, पुरुख सब कियोक पंडिताइन कहि सम्बोधित करैक। अहि बात पर अनुराधाक सृंग चढ़ि जाइक। मुदा छलि लाचार। अनुराधा ओना बहुत रोमांटिक प्रकृति कँ महिला छलि। आरो अनेक बात रहैक जाहि पर अनुराधा कँ तामस चढ़ैक।
एक बेर पितृपक्षक समय मे एक आदमी एलैक आ बहुत समान अपन मृत पिताक नाम पर ओहि तिथि कऽ दान केलकैक। समान सँग पैसा सेहो दान केलकैक। अंत मे ओ आदमी अपन झोड़ा सँ बीड़ीक दू गठरी

निकालि जटा दिस बढ़ैत बजलैक: "महाकाल पंडितजी, हमर पिता बीड़ी पिबैत छलाह। हम प्रतिवर्ष हुनक नाम पर पितृपक्ष मे अन्य सामग्री सँग बीड़ी सेहो दान करैत छी।"
ओकर बात पर जटा हर-हर महादेब कहैत बीड़ी ओकर हाथ सँ लऽलैत छलैक मुदा अनुराधा तामसे भेर भऽजाइक।
एकबेर अनुराधा राघब सँ मजाक मे कहलकन्हि:"कहू राघब जी, ई कोनो बात भेलैक जे लोक सब माता पिताक नाम पर पितृपक्ष मे बीड़ी सिगरेट दान करैत अछि। ऊपर सँ तर्क अनमोल। कहत, हमर पिता पीबैत छलाह ताहिं चढ़ा रहल छी। भाई पिता दारू पिबैत छलाह तऽ अहाँ दारू दान करब? पिता लड़की सँग सुतैत छलाह तऽअहाँ लड़की दान करब? बजरखसुआ नहितन! अनेड़े कें चोचला ठाढ़ केने अछि! तँग आबि चुकलछी!"

राघब चुस्की लैत कहथिन: "चलू ने, अहि सँ तऽफायदा अछि ने आहाँकें! आ लड़की दान केलकैक तऽ अहाँक पण्डित जी कें!"
अनुराधा: "कपार फायदा! लोक हँसैत रहैत अछि। ककरा लग बेच जाउ? लोक हंसत। सब बीड़ी सिगरेट कें फेंकि दैत छी। रहल लड़की बला बात तऽ पण्डित जी खूब आनंदित हेताह। एकरंगाह चीज़ सँ नव चीजक रस भेटतनि। मुदा से हम थोड़े ने होमऽ देबनि!"

जीवन चलि रहल छलैक। जटा आ अनुराधा कें एक बेटी आ दू बेटा रहैक। दोसर बेटा भेलाक़ बाद अनुराधा नशबंदी कें ऑपेरशन करा लेलनि।
अपन सौन्दर्यक प्रदर्शन मे अनुराधा बहुत साकांक्ष रहैत छलि। हमेशा चमक दमक मे मातलि। देह कहियो झुर नहिं भेलैक। कसल-कसल आंगी, नागिन जकाँ जुड़ा आ चलबाक अंदाज अनुराधा कें गजगामिनी बनेने रहैक। अगर पंडिताइन कें तगमा नहिं भेटल रहितैक तऽकतेक आदमी लाइन मारैत रहितैक! मारऽबला एखनो की रुकैक! ताहि पर सँ कातिल बनि बड़का-बड़का आँखि सँ ताकब एहेन चीज़ रहैक अनुराधा कें जे बूढ़ों लोक कें जुआन बना दैक।

अनुराधा नख शिख सिंगार करैक। ओकरा बुझल रहैक जे जीवन मे स्त्री पुरुख कें सब सुख करक चाही। अनुराधा बुझैक जे केलि पुरुख कें बान्हि कऽ रखबाक सर्वोत्तम यन्त्र छैक। ओकरा बूझल रहैक जे उदासीन पुरुख कें सेहो एक चतुर महिला अपन सौंदर्य, उभार आ उत्तेजना सँ प्राण आनि सकैत अछि। ओकरा बुझल रहैक जे अगर पुरुखक मोन नहियो छैक तऽ सयानि आ खेललि नारी अपन कन्त कें शरीर मे काम ज्वालाक आगि फूँकि सकैत अछि। ओकरा काम क्रिया मे लीन कऽसकैत अछि।

अनुराधा केलि क्रिया कें खेलब कहैक। पता नहि ई सोनहाएल देसी खांटी शब्द अनुराधा कतऽसँ सीखने छलि? अपन किछु खाश महिला सँग जखन बात करैत छलि तऽखेल शब्दक प्रयोग करैत छलि अनुराधा। एकबेर एक नव स्त्री कें जे अनुराधा कें दूरक सम्बन्ध मे ननदि लगतैक अनुराधा पुछि देलकैक: " अहाँक तऽटटका बिआह भेल अछि। कतेक बेर खेल करैत छी?"

बेचारी नव व्याहलि नारि, कानपुर मे रहलि, कानपुर मे पढ़लि, नहि बुझि सकलैक अनुराधाक बातक अर्थ। मुँह भकुएने ठाढ़ रहलैक।
जखन अनुराधा कें लगलैक जे ओकर बातक आसय ओ लड़की नहि बुईझ सकलैक तऽअपन बत्तीसी देखबैत बाजलि: "दूर अलूरि नहितन! एकरो माने नहि बुझलौ अहाँ! हम आब खोइल कऽकहि दैत छी। हम पुछैत रही जे घरबला सँग कतेक बेर "ओ" करैत छी?"
अनुराधाक बात पर लाजे लाल भेल नायिका मुँह झपैत घर दिस भागि गेलैक।

अनुराधा दाँत देखबैत नितराइत फेरो ओकरा पाछा-पाछा जाइत पकड़ि लैक आ कहैक: "अरे, अहि मे लाजक कोन बात! हम की कोनो कतौ बाजब? हम तऽई जानय चाहैत छी जे अहाँ सब एक दोसर कें कतेक चाहैत छी, कतेक सँतुष्ट करैत छी। आखिर ई काज तऽ भगवानक देन छनि। कें नहि खेल करैत अछि से कहू?अहि सँसारक वृद्धि स्त्री पुरुखक खेले सँ होइत छैक।"
अनुराधाक बातक स्पष्टीकरण सँ ओहि नवब्याहता कें हिम्मत बढलैक। लज्जा भाव कनि तिरोहित भेलैक। उमंग कनि जगलैक। स्त्री पुरुखक केलि पर कनि जिज्ञासा बढ़ि गेलैक। अनुराधा कें सँबोधित करैत बजलैक:
"हमर छोड़ू। पहिने अपन कहू जे अहाँ सब जखन बिआह भेल तखन कतेक बेर खेल करैत रही?"
अनुराधा पकठोस भेल खुजल कामायनी बनैत बाजलि: "हम सब तऽ ओही मे मगन भऽगेल रही। की दिन आ की राति। सदैव ओकरे जोगार, ओकरे प्रयोजन। कतेक बेर होइक़ तकर कोनो गिनती नहि। कखनो अपन मोन नहि रहैत छल तऽपति महोदय कें मोनक रक्षार्थ ओहि प्रक्रिया मे लागि जाइत रही। से जे होइक़ मुदा एहि आनंदक कोनो बरनेका नहि।"

आब नवब्याहता कनि सलज्ज बनल उत्तर देलकैक: "हमरो सबहक स्थिति अहिंक सन अछि। कखन दिन आ राति पते नहि चलैत अछि। कतेक राति एहि चक्कर मे भोजनों नहि बना पबैत छी।"

अनुराधा: "बाह, ई भेल ने बात!"

नायिका: "लेकिन हमरा सँ अधिक हमर पतिदेवक ध्यान अहि दिस रहैत छनि। कतेक बेर हम हारि मानि लैत छी। कतेक बेर थाकि जाइत छी।"

समय चलैत रहलैक। बच्चा सब बढ़ैत रहलैक मुदा अनुराधा आ जटाक प्रेम नित नूतन होइत रहलैक। जँ-जँ बयस बढ़ल गेलैक दुनूक़ मध्य प्रेमक सघनता बढ़ल गेलैक।

एक बात कनि गड़बड़ भऽगेलैक। जखन जटा मर्डर केश मे फ़सलैक तांहि क्षण अनुराधा गर्भवती रहैक। ओहि समाचार सँ अनेक तरहक शंका, भय आदि सँ ओकर मोन चिन्तित रहैक। तकर असर ई पड़लैक जे

दुनूक पहिल सँतान बेटी कनि मंद भऽगेलैक। जखन बेटी अठारह बरखक भेलैक जटा ओकर बिआह करा देलकैक। बिआह मे नीक जकाँ ठका गेलैक।

ख़ैर, बिआह भेलैक तऽबच्चो भऽगेलैक। बेटा रहैक। जटा आ अनुराधा नाना नानी बनि गेल। समय कट लगलैक। नाति सदैव नाना नानी लग रहैक। जटा क बेटी किछु कोर्स शुरू केलकैक जाहि सँ अपन पैर पर ठाढ़ होइक़। दोसर बच्चा नहि करतैक तकरो निर्णय लऽलेलकैक।

जटाक दुनू बेटा पढ़य मे ठीक नहि रहलैक। बड़का कहुना बारहवीं केलाक बाद कोनो कंपनी में छोट मोट नौकरी शुरू केलकैक। छोटका प्राइवेट कॉलेज सँ इंजीनियरिंग केलाक बाद बैसल रहैक। ओना कानपुर मे दुनु बेटा लेल मकान, नीक सम्पति किन देलकैक जटा।

अहि बीच एकाएक एक चमत्कार भेलैक। एक बेर भागवत कथा सुनि ततेक ने विभोर भेलैक अनुराधा जे शुद्ध शाकाहारी भऽगेलैक। गला मे तुलसीक माला धारण कऽ लेलकैक। सदैव *हरे कृष्ण हरे कृष्ण* भजैक। ओकरा भगवान मे, भगवत भजन मे चित लागि गेलैक। प्याज, लहसुन सब किछु सहर्ष त्यागि देलकैक।

जटा अपने तऽ शाकाहारी नहि भेल मुदा अनुराधा लेल कोनो व्यवधान नहि ठाढ़ केलकैक।
समय चलैत रहलैक। अनुराधा लेल जटा एक कार सेहो किन देलकैक।

एकदिन कार सँ जटा आ अनुराधा हरिद्वार जाइत छल। नाति सेहो सँग रहैक। मध्य रास्ता मे कारक बैलेंस गड़बड़ा गेलैक। कार एक बेर उलटि कऽ फेरो ठीक भऽ गेलैक। कार पर सँ अनुराधा आ ओकर नाति खसि पड़लैक। अनुराधाक कपार फुइट गेलैक। नाति ओतहिं दम तोड़ि देलकैक। महा अनर्थ भऽगेलैक। लोकक सहायता सँ जटा अपन पत्नी अनुराधा कें एक अस्पताल लऽ गेलैक। बहुत खून चढलैक। ऑपरेशन भेलैक। घाव ठीक भऽगेलैक मुदा वाक बंद भऽगेलैक।

अनुराधा अपन मुँह सँ खेनाइ बन्द कऽदेलकैक। नली लगा लिक्विड वस्तु देल जाइक। जटा अपन सब किछु छोड़ि अनुराधाक सेवा मे लागल रहल। छह मासक बाद अनुराधा उठइ बैसय लगलैक। मुदा याददाश्त वापस नहि एलैक। वाक सेहो बंदे रहलैक। ककरो नहिं चिन्हैक। कोनो उचाबच नहि। कोनो सुधि नहि। सब कर्म होइक़ मुदा पता नहि चलैक। अंत मे जटा जेठ बेटाक बिआह करा लेलक। पुतहु आबि गेलैक मुदा अनुराधा कें कोनो प्रगति नहिं भेलैक।
इमहर अपन पुतहु कें समस्या सँ द्रवित भेल भोला अन्न पानि छोड़ि देलनि। एक बरखक बाद भोला बिरासी बरखक अवस्था मे अहि सँसार कें छोड़ि देलाह।

भोलाक श्राद्ध कर्म भेलाक़ दस दिनक बाद एक दिन अनुराधाक हालत देखि जटा छोट नैना जकाँ ठोहि पारि काने लागल। एकाएक बाजि उठल: "हे महाकाल, हे केशब! कतेक परीक्षा लऽरहल छी! हरे कृष्ण आब

लाचार छथि। हिनका मुक्ति दियौन!" ई कहैत जटा अपना हाथे एक मंत्रक जाप करैत गंगाजलक चारि बून्द अनुराधा कँ मुँह मे डालि देलकैक।
राति कँ ठीक एगारह बजे एक हिचकी उठलैक आ अनुराधा गोलोक लेल बिदा भऽगेलि। जटा अंतिम नोर ख़सा बेटा कँ कर्मक तैयारी मे लगा देलकैक। एक अध्याय समाप्त भऽगेलैक। महाकालक आराधना मे एखनो लागल अछि जटा। शायद जिनगी मे फेरो हेतैक कोनो करामाती घटना। हर-हर महादेबक स्वर सँ अनघोल भेल रहैत छैक मन्दिरक प्रांगण। ओहि निनाद मे जेना अबैत रहैत छैक अनुराधाक स्वर - ओकर गीत, भजन, हरे कृष्णक नाम, ओकर प्रेमक अलाप,ओकर चूडीक खनखन, ओकर पाजेबक रुनझुन, ओकर प्राती आ साँझक भक्तिमय गान, ओकरबटगमनीक हुल्लसिततान। ओह, कतऽछी भगबान!

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

प्रणव झा

दोसर बियाह

(लघुकथा)

विनय काँची कामाकोटि चाइल्ड ट्रस्ट सं डीएनबी पीडियाट्रिक्स आ एफएनबी पीडियाट्रिक हीमेटोलॉजी (शिशुरोग विशेषज्ञ) क के सहरसा में नबे-नबे प्रैक्टिस शुरू केने छलाह. काँची कामाकोटि चाइल्ड ट्रस्ट सन जानल-मानल संस्थान सं शिशुरोग में विशेषज्ञता आ फेलोशिप हासिल केला के बाद कइएक महानगरीय कॉर्पोरेट अस्पताल में हिनका ज्वाइन कर के मौक़ा भेटल छल, मुदा विनय एमबीबीएस करै काल ई नियारने छलाह जे डॉक्टरी में विशेषज्ञता हासिल केला के बाद गाम घुरि औता आ सहरसा में अपन क्लिनिक खोलि के प्रैक्टिस करथिन. हुनका बुझल छल जे एही ठाम विशेषज्ञ डॉक्टर जे नैतिकता के साथ प्रैक्टिस करै, केर कमी छै आ तैं इहो विश्वास छलैन्ह जे एक बार जमि गेला मातर हिनकर प्रैक्टिस निक चलतें.

नबे-नबे क्लिनिक फुजले छल ताहि दुआरे एखन रोगी-मरीज कम्मे आबै छलैन्ह क्लिनिक पर. बेसी मरीज सब गरीब-गुरबा आ ग्रामीण परिवेश बाला सब छल. मध्यम आ उच्च वर्ग एखन धैर या त डॉक्टर विनय के क्लिनिक आ योग्यता से अनभिज्ञ छलाह आ नै त हुनकर छोट-छीन क्लिनिक आ हुनका, पहिने सं स्थापित डॉक्टर के मुकाबला में स्वीकारने नै छलाह.

एहने सन में एकटा मध्यम वर्गीय जोड़ा अपन दू मासू बच्चा के ल क हिनका क्लिनिक पर आबय लागल छलाह, आ फेर हिनका सब सं विनय के लंबा नाता बैन गेल छल. गोर-नार कनियाँ आ लंबा-तगड़ा बर.

यादवजी अपने त एकदम मॉडल सन लागै छलाह. दुनू के कहाँदिन लव मैरेज छल. यादवजी अपने बिल्डिंग मटेरियल के कारोबार करै छलाह आ कनियाँ बैंक में क्लर्क छलीह. सदिखन अपन बच्चा ल के दुनू बेक्ति संगे आबै छलाह. दुनू बड्ड खुशमिजाज छलाह आ विनय के बहुत आदरो करैत छलाह.

दुनू लगभग तीन बरष धैर अपन बच्चा के ल क हिनका क्लिनिक पर आबैत रहल छलखिन मुदा तै के बाद लगभग दू बरष से हिनका क्लिनिक पर नै आयल छलखिन. हिनका होय छल जे कदाचित बच्चा स्वस्थ हेतैक या भ सकैअछि जे ओ सब जगह या डॉक्टर बदैल नेने होइथ.

मुदा एक दिन बच्चा के माय एकसरे बच्चा के नेने हिनका क्लिनिक पर पहुँचलि. आबैत मातर विनय पुछलखिन "अरे वाह! एत्तेक दिन बाद एलहुँ अछि! की हाल चाल छैक?"
"जी सब ठीके ठाक छै." हँसैत ओ बाजलि, मुदा हुनका चेहरा पर ओ खुशमिजाजी नै देखल जे पहिने देखना में आबै छल.
"और, यादव जी के की हाल चाल? कत छैथ आई कैल्ह?"

किछ काल मौन रहला के बाद ओ बात बदलैत बाजलि जे "सर एकरा चारि दिन सं बोखार लागि रहल छै."

विनय के अंदाज लागि गेल छल जे हुनकर बात के जानी-बुझि के अनदेखल क देल गेल छल, स्वाइत ओहो ई बात के अंठिया क बच्चा के ट्रीटमेंट करै लागल छलाह.

"सर यादव जी आ हम अलग भ गेल छी."

ई सुनैत प्रेस्क्रिप्शन लिखैत विनय के कलम रुकि गेल छल.

"ओह! मुदा से किएक? " विनय पुछलखिन.

"सर ओ बड्ड तमसाय छलाह हमरा पर, बात-बात पर चिचियेनाइ आदति बनि गेल छल हुनकर. काज-धंधा सेहो बंदे सन क देने छलाह ऊपर से हम काज पर जाय छलहुँ ताहु में शक करै लागल छलाह."

ई सब सुनैत विनय अपन भावना पर संयम राखैत एकटा प्रोफेशनल डॉक्टर जेका दवाई लिखि रहल छलाह. किये त पहिल त ई, जे ओ एखन धरि मामिला के एकै टा पक्ष सुनने छलाह आ दोसर जे ओ महिला हिनका से कोनो सलाह नै मांगने छलीह.

"ई दवाई सब बच्चा के खुआबियौ आ तीन दिन बाद फेर से देखा लेब. साधारण वायरल बोखार लागि रहल अछि, तैं घबरेबा के कनियों नै छैक." एतेक कहि विनय चुप भ गेल छलाह

मुदा जखन ओ उठि क जाय लागल छलीह त बिन मांगने सलाह नै दै के अपन सिद्धांत पर विनय के नियंत्रण नै रहलैन आ एत्तेक भरि कहि देने छलाह जे "एकबेर अहाँ दुनू के हमरो से पुछबाक चाही छल या कोनो मनोवैज्ञानिक कंसल्टेंट स सलाह ल लै के चाही छल, ख़ास क के बच्चा के भविष्य के लेल."

"सर, आब त जे होय के छल से भ गेल. कोर्ट में सेहो मामला निबटै बला अछि. म्युचुअल डिवोर्स भेट जेतैक."

२-३ दिन बाद यादवजी सेहो क्लिनिक पर एलाह. एकसरे.

"सर हमर बच्चा आयल छल की अपन माय संगे?"

"हँ आयल छलीह, मुदा अहाँ के की भेल अछि, बड्ड कमजोर लागि रहल छी?" यादवजी के प्रश्नक जवाब में हुनकर देह-दसा देखैत विनय जवाबक संग ई सवाल केने छलाह.

"सर, हमर किडनी खराप भ गेल अछि, डायलिसिस पर छी. हमर बच्चा केहेन छै आ ओकरा की भेलै य " "बच्चा ठीक य, साधारण वायरल बोखार छै २-४ दिन में ठीक भ जेतै. अहाँ दुनू के बीच की भेल? कत्तेक निक लागय छलहुँ दुनू एक संगे." विनय बजलाह.

"सर ऐ सब में हमरे गलती छल, पिछला दू साल सं हम ओकरा संगे बड्ड खराप व्यवहार करै लागल छलियै, बात-बात पर चिचियाइत छलहुँ, एक बेर त हाथो उठा देने छलिये, ताहि से ओ घर छोड़ि के चैल गेल छलीह."

"विवाह के कत्तेक समय भेल छल?"

"सर, छह साल भ गेल छल."

"आ अहाँ कहिया से एना करै लागल छलहुँ?"

"सर दू-एक साल से पता नै हमरा एत्तेक तामस किएक उठै लागल छल."

"शायद अहाँ के बीपी बहुत दिन सँ हाई भेल छल" विनय बाजलाह

"हमरा पता नै छल, एक बेर स्टोन आ इंफेक्शन भेल छल."

"भ सकै अछि जे अहाँ हाई बीपी आ यूरिया बढ़ला के चलते खिसियाह भ गेल हेबै."

"भ सकै अछि सर, ई त करीब सात महीना पाहिले तकलीफ भेल छल तखन पता लागल जे क्रिएटाइन ८ भ गेल अछि."

" आ ओ अहाँ स कहिया अलग भेली?"

"करीब एक साल पहिने"

"हुनका पता छैन ई सब गप्प?"

"नै सर, आब की फ़ायदा हुनका बताबय के. ओ अपन जिनगी निक से जीबैथ आ हमर बच्चा बस ठीक से रहै आर हमरा किछ नै चाहि.ओहुना ओ शायद दोसर बियाह क रहल छथिन आ संग रहितहु कोन हुनका हमर परवाहि रहितैन." यादवजी बाजला

"डॉक्टर अपनेक किडनी के विषय में की कहै छैथ?"

"सर ट्रांसप्लांट के लेल कहल गेल अछि, ता धरि डायलिसिस" अपन दयनीय परिस्थिति के बावजूद यादवजी पूर्णत: संयत, दृढ आ शांतचित भ जवाब देने जा रहल छलाह.

"ट्रांसप्लांट करवा पेबै?" विनय पुछलखिन.

" सर दू भाई अछि हमरा, दुन्नू पहिनहे भिन्न भ गेल अछि, माय बूढ़सूढ़ अछि. तथापि छोट भाय त किडनी देबय चाहै छल मुदा हुनकर कनियाँ आ सासुरक लोक सब कन्नारोहैट मचा देने अछि, अस्तु आब ओहो नै द सकत."

ऐ तरहे ओ लंबा-चौड़ा, हट्टा-कट्टा नौजवान के जीवन विनय विनय अपना सामने ऐ तरहे बदलैत देखलखिन

किछ देर आर गप्प केलाक बात ओ चल गेल छल.

तीन दिन बाद हुनकर कनियाँ बच्चा के ल क फेर आयल छलीह. बच्चा ठीक छल.

"सर एकटा बात पूछी?" चिरपरिचित चहचहाट के संग ओ बाजलि

हँ हँ किएक नै पुछू. "हम यदि दोसर बियाह क लेब त हमर बच्चा के दिमाग पर खराप प्रभाव त नै पड़तैक?"

ऐ बातक उत्तर विनय बहुत जल्दी आ संक्षिप्त में द क बचै चाहै छलाह. अस्तु बजलाह "ई त बहुत रास बात पर निर्भर करत पहिल त ई जे जकरा सं अहाँ विवाह करबै ओकर ऐ बच्चा के प्रति की व्यवहार रहैत छैक, किएक भ सकै अछि जे अहाँक बच्चा कइएक महीना या साल भरि हुनका बाप के रूप में नै देख पाबै. यादवजी के किछ खबर अछि अहाँके?" संक्षिप्त उत्तर दैत विनय ई प्रश्न केने छलाह.

"नै बस कियौ कहै छल जे दारू पी पी के कमजोर भ गेल अछि." ओ बाजलि
"एहन बात नै छैक, अहाँक पता होबाक चाहीए छल जे हुनकर दुनू किडनी खराप भ गेल अछि, पिछ्ला छः मास सं ओ डायलिसिस पर जीब रहल छैथ. आ जखन अहाँ दुनू संग छलहुँ हमरा लगै अछि जे तखने सं हुनकर किडनी के शिकायत प्रायमरी फेज में छल आ है बीपी आ शारीरिक बदलाव के कारणे ओ एहन खिसियाह भ गेल छलाह आ काज-धंधा पर ध्यान नै दैत छलाह." विनय बाजल छलखिन.

ई सब गप्प सुनि के यादवजी के कनियाँ के मुंह अवाक भ गेल छल.

विनय के हुनकर चेहरा पर बनैत बीतल समय में घटल घटना सब के तीव्र फ्लैशबैक के अंदाज लागय लागल छल. जेना कोनो प्रोजेक्टर पर कोनो फिल्म के रिपीट क देल गेल होय आ क्रिटिक ओकर सीन सब के नब दृष्टिकोण आ व्याख्या के संग देख रहल होय.

फेर फ़टाफ़ट ओ उठली आ बच्चा आ इलाजक फ़ाइल लय ओ बाहर चल गेली. कदाचित ओ अपन मोनक भीतरी भाव के विनय तक नै पहुँच दैत चाहै छलीह, शायद ओ अपन व्यथा ककरो नै बतबै चाहे छलीह.

अब विनय अपन कुर्सी पर पाछाँ धसि गेल छलाह आ अगिला मरीज के आबय के इंतज़ार करैत सोचे लागल छलाह जे व्यर्थे ओ हुनका ई सब गप्प बता देलखिन. बेचारी कतेक खुश छलीह. दोसर बियाह करै वाली छलीह, करितथि त अपन नव जिनगी के तलाश करितथि, हमर ऐ में की जाय छल...आदि..आदि....

ऐ घटना के करीब तीन महीना बीत गेल छल. एक दिन अचानक से ओ दुनू बेक्ति फेर अपन बच्चा संगे विनय के क्लिनिक पर उपस्थित छलाह. पहिलुके चिर-परिचित अंदाज में ओ बाजलि...

"सर पन्द्रहम दिन हिनकर रीनल ट्रांसप्लांट करवा रहल छी"

"अरे वाह, डोनर भेंट गेल?" उत्साह आ खुशी मिश्रित भाव स विनय पुछलखिन

"जी, सर हमर सभटा जांच भ गेल अछि, किडनी मैच क गेल छै" ओ बजली.

ऐ पर यादवजी बाजला "जी सर ई किडनी द रहल छैथ हमरा".

"दोसर बियाह क रहल छथिन ई.......हमरा सं" कनियाँ के खिसियाब के अंदाज में यादव जी बाजल छलाह. प्रेम, खुशी आ उमंग के चमक हुनकर आँखि में साफ़ देखल जा सकै छल.

आई विनय सेहो अपना आप में बहुत संतुष्टि के अनुभव क रहल छलाह...सोचि रहल छलाह जे मनुक्खक केहन केहन व्यवहार होइत अछि....

-प्रणव झा
राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड,नयी दिल्ली
ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

रबीन्द्र नारायण मिश्र- ३ टा निबन्ध

अशांतस्य कुतः सुखम्

जीवनमे सभ किछु भेटलाक बादो कखनहुँ काल लोकक मोन होइत रहैत अछि जे कोनो एहन ठाम चली जाहिसँ मोन निचैन भए जाए, सभ किछु बिसरि किछु दिन शान्ति सँ बिताबीआ झंझटिसभकँ कात कए दी। कखनो-कखनो चिज वस्तुसभव्यर्थ लागए लगैत छैक, होइत छैक जे कहुना ओहिसभसँ पिंड छोड़ाबी किंवा किछु एहन कए ली जे निश्चिंत रही। से किएक होइत छैक?

सबदिन हमसब अपन धीया-पुताक सुख-सुबिधाक हेतु काज करैत रहैत छी। समाजमे, अपन लोक-बेदक बीचमे मान-सम्मान हो, हमरा श्रेष्ठ बुझल जाए,अनकासँ हम सेसर रही, एही लफड़ा सभमे जीवनक मूल्यवान समय चलि जाइत अछि आ अन्तमे हाथ अबैत अछि फोकला। मनुक्खक मोहवंधन ततेक मजगूत होइत अछि जे ओ अन्त-अन्त धरि ओकरे फाँसमे फँसल मेहिआ बड़द जकाँ बहैत रहि जाइत अछि आओर एकदिन मुट्ठी बन्हने एहि दुनियाँसँ प्रस्थान कए दैत अछि। सभ किछु ठामहिँ रहि जाइत अछि।क्यो एकर अपवाद नहि रहैत अछि।

आया है सो जाएगा, राजा-रंक फकीर।

एक सिंघासन चढ़ि चले, एक बंधे जंजीर।।

एकबेर एकटा महिलाकँ लकबा मारि देलकै। ओ अस्पतालमे भर्ती रहथि। बाजल नहि होनि। कै दिनक प्रयासक बाद हुनका कनी-मनी होश भेल। कहुनाक मुँहसँ आवाज फुटलैक। होश होइतहि पहिल बात ओ इएह बाजल जे सूदि वसूलल गेल कि नहि? सोचियौ, जे टाकासँ केहन मोह छलेक ओकरा! जान जाए पर छलैक, अस्पतालक आपत्तिकालीन विभागमे भर्ती छल, हैथ-पैर सुन्न भेल छलैक, मोसकिलसँ कहुनाक आवाज फुटलैक तँ सभसँ पहिने की बाजल? इएह थिक माया। ई जनितो जे सभटा एतहिँ रहि जाएत, लोक अन्त-अन्त धरि टाका बटोरबामे, लूट-खसोटमे लागल रहैत अछि। तखन शान्ति कतएसँ होएत?

एकटा राजाक महल लग एकटा लोहार दिन-राति खट-खट करैत रहल छल। राजा एहि बातसँ तंग भए गेलाह। कोनो उपायसँ चाहथि जे एहि खट-खटीकँ बंद कराबी। एक दिन ओ ओहि लोहारकँ बजओलथि।लोहार डरा गेल। ओकरा नहि बूझएमे अबैक जे ओकरासँ कोन अपराध भेल जे ओकरा राजा बजा रहल छथि। खैर! ओ राजासँ भैंट करए पहुँचल।

ओकरा देखिते राजा कहलखिन जे तोरा जतेक टाका चाही से लए लएह मुदा ई खटर-पटर बंद करह। राजाक बात काटत के? ओ राजासँ यथेष्ट टाका लेलक आ ओहि दिनसँ अपन काज केनाइ बंद कए देलक। काज बंद तँ कए देलक मुदा ओकरा तहिआसँ निन्न नहि होइक। की करए? कतेको राति करोट बदलैत बीति गेलैक। एहिसँ ओ ततेक तंग भए गेल जे होइक जे जान चलि जाएत। हारि कए ओ राजाक

ओतए दौड़ल गेल आ जे टाका लेने छल से आपस कए प्रार्थना करए लागल जे ओकरा अपन काज फेरसँ शुरु करबाक आज्ञा देल जाइक। राजा छगुंतामे पड़ि गेलाह। पुछलखिन जे बात की थिक, ओ किएक टाका आपस कए रहल अछि? लोहार कहलकैक-''सरकार! जहिआसँ काज छोड़लहुँ, हमर सुख चैन हरा गेल। हमरा माफ कएल जाए, हम अपन पहिलका जीवन जीबए चाहैत छी। ओहीसँ हमरा शान्ति भए सकैत अछि।'' राजा ओकर समस्या बूझि गेलाह आ ओकर बात मानिलेलाह। तकरप्रातेसँ ओ लोहार अपन काज शुरु केलक। ओहि राति ओ बहुत चैनसँ सुतल। फेरसँ वएह ठक-ठकी सुनि कए राजा बहुत जोरसँ हँसलाह। ई कथा बहुत लोककेँ बूझले होएत, मुदा एहिमे बहुत गंभीर शिक्षा भरल अछि। धन-संपत्तिसँसुख चैन नहि भेटि सकैत अछि। लोभ-लालचसँ नहि, अनकर हक मारि लेलासँ नहि अपितु परिश्रमपूर्वक उपार्जित धनसँ जीवन-यापन केनेसँ मोनमे शान्ति भेटि सकैत अछि।

समस्या अछि जे लोकसभ सभ किछु बूझितो एतेक फिरसान किएक रहैत अछि जखन कि क्यो से चाहैत नहि अछि? कारण सहजे ताकल जा सकैत अछि। अधिकांश व्यक्ति अनकर सुखसँ दुखी रहैत छथि। ओ किएक बढ़ि रहल अछि, ओकर मकान हमरासँ पैघ किएक छैक, ओकर बच्चा कतहुँ पढ़लकैक अछि, ओ सभतँ सभ दिन हमरासभसँ दव रहल आब कतएसँ पैघ भए जाएत? एहीठाम हम मारि खाइत छी। जँ हम सकारात्मक सोच-बिचार राखी, अनको उपलब्धिसँ प्रशन्न हेबाक भाव राखी तँ निश्चय हमरा प्रशन्न हेबाक बेसी अवसर भेटि सकैत अछि। छै ने सत बात?

नान्हिटा जीवनकेँ के कोना बिताबए चाहैत अछि से बात बहुत हद धरि ओकरेपर निर्भर करैत अछि। समयतँ बीतिए जाएत चाहे जेना बीता लिअ,हँसिकए बीता लिअ चाहे कानि कए। असलमे कोनो घटना विशेष ककरा पर केहन प्रभाव करत से ओकर प्रवृतिपर निर्भर करैत अछि। ई ओहिना भेल जेना एकटा गिलासमे आधा पानि भरल अछि तँ क्यो कहत जे आधा पानि खतम भए गेल, तँ क्यो कहत जे एखन तँ आधा पानि बाँचले अछि, चिंता कथीक? एकटा अपन मकान बनलासँ कतेक खुशी होइत छैक। तहिना जँ अनको मकानसँ हमखुश हेबाक प्रवृति विकसित कए ली तँ नित्य-निरंतर प्रशन्नताक वरखा होइत रहत एहिमे कनिको शंका नहि।

चमक-दमकमे रहनिहार अनेको लोककेँ देखलासँकै बेरि मोनमे होइत छैक जे ई बहुत भाग्यवान अछि, बेसमौजमे जीवि रहल अछि। मुदा ई बात कै बेरि कपोल-कल्पना साबित होइत अछि। कतेको फिल्मी कलाकार आत्महत्या करैत छथि। जौं धन-संपत्ति, ओ सामाजिक प्रतिष्ठासँ लोक सुखी रहैत तँ वएह सभ रहितथि। मुदा से असलियतमे नहि अछि।

लोक दिन-राति पूजा-पाठ करैत रहैत अछि, कथी लेल? जाहिसँ मनोकामना पूरा होअए, परिणाम होइत अछि जेपूजा करितो काल हम शांत नहि रहि पबैत छी। हम गाममे कै बेरि पूजा करैत काल लोककेँ चिकड़ैत-भोकरैत देखने छी, महादेवपर जलढ़री करैत काल अनका श्राप दैतसुनने छी, आकबुला-पाँती करैत तँ के-के ने देखने होएत। जखनमाथमे एतेक ओझर लए कए पूजा-पाठ कएल जाएत तँशान्ति कोना भेटि सकत? भेटत-अहीँ कहू? इएह थिकैक समस्याक जड़ि।

यद्यपि आयु बढ़िते जाइत अछि, लोकक मोह घटिते नहि अछि। सभकिछु हमरे भए जाएत से कतहुँ संभव होइक! ई जीवन अपूर्णतासँ भरल अछि। सभ किछु नहि भेटि सकैत अछि। तखन मर्जी अहाँक अछि जे हाय! हाय!करैत रही किंवा जे किछु अदिष्टसँ भेटल तकरा सहर्ष स्वीकार कए संतुष्ट रही।

ई बात तँ बूझि गेलिऐक जे शान्तिसँ रही, एकर बहुत नफा छैक, मुदा शान्ति प्राप्त कोना भए सकैत अछि? ताहि हेतु की कएल जाए? की नहि कएल जाए? असलमेउपदेश देलासँ किंबा किताबमे पढ़ि लेलासँ शान्ति प्राप्त नहि कएल जा सकैत अछि। ई तँ जीवन कला थिक एवम् निरंतर अभ्यासेसँ प्राप्त कएल जा सकैत अछि। तथापि किछु बात मोटा-मोटी जँ ध्यानमे राखल जाए तँ बहुत रास झंझटिसँ बँचल जा सकैत अछि आओर ओही अनुपातमे शांत जीवन बिताओल जा सकैत अछि।मोनमे संतोखक भाव एवम् अनावश्यक प्रतिस्पर्धासँ बचबाक चाही। आवश्यकताकेँ सीमित करबाक चाही। आय ओ व्ययमे संतुलन हेबाक चाही आ सभसँ जरूरी अछि जे मोनमे लोक कल्याणकारी भावना विकसित करबाक चाही। जे बात अपना नीक नहि लगैत अछि, से अनका संग नहि करी।अनकर उपलब्धिसँ ओहिना प्रशन्न होइ जेना अपनसँ। अनकर निंदासँ बची। परिवारमे सभक उचित महत्व दी। खाली अपने बात चलओनिहारकेँ अन्ततोगत्वा निराशा हाथ लगैत अछि।

शान्तिक हेतु जरूरी थिक जे मन कल्याणकारी विचारसँ ओत-प्रोत हो। दोसरक हितकारी भावना हो। जहिना हम अपन प्रगति चाहैत छी, तहिना अनको लेल सोचिऐक।से सभ जौं हमर मोनमे रहत तँ निश्चय हम शान्ति ओ आनंदक अनुभव कए सकैत छी।तखने सुखी रहि सकैत छी।

गीतामे कहल गेल अछि जे जकर शान्ति नहि तकरा सुख कतए?

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।

न चाभावयत: शान्तिरशांतस्य कुत: सुखम्।।q

सफलताक रहस्य

एहि दुनियाँमे क्यो एहन लोक नहि भेटताह जे अपन अधलाह चाहैत होथि, अपितु सभ एही प्रयासमे लागल रहैत छथि जे संसारक अधिक सँ अधिक सुख-सुविधा हमराभेटए, सभ मनोकामना पूराहोअए, बाल-बच्चा सुखी रहए। एही प्रयासमे हमसभ निरंतर लागल रहैत छी।एहिमे किछु गलत नहिछैक मुदा समस्या तखन होइत अछि जखन सभ प्रयास केलाक बादो मनोवाँछित फल नहि भेटैत अछि।एहि परिस्थितिमे कतेको गोटे निराश भए जाइत छथि, प्रयास छोड़ि दैत छथि आ कतेकोबेर अनुचित रस्ता सेहो अख्तियार कए लैत छथि।

कै बेर एहन होइत अछि जे हम कोनो काजमे बर्खोसँ लागल रहैत छी आ जखन लक्ष्य एकदम लगीच रहैत अछि तँ थाकि कए, निराश भए अपन प्रयासकेँ सिथिल कए दैत छी किंबा आधा-अधूरा छोड़ि दैत छी।परिणाम अनुकूल कोना होएत?से नहि होइत अछि, तँ विधाताकेँ दोख देबए लगैत छी। दुनियाँमे ज्यादातर

असफल लोक आत्म-चिंतन करबाक बजाए अपन असफलताकेँ हेतु दोसरकेँ जिम्मेदार ठहराबए लगैत छथि। मुदा ताहिसँ की होएत?

कोनो प्रकारक काजक सफलताक हेतु जरूरी अछि जे हमर समस्त शक्तिक रचनात्मक उपयोग हो, एकहि संगे दसठाम हाथ देलासँ किछु नहि भए सकैत अछि। कखनो किछु, कखनो किछु जँ करैत रहब तँ बानर बला हाल भए जाएत जे जाही डारिपर जाइत अछि ओकरा दोसर डारि बेसि हरियर लागए लगैत अछि।एकरा लोक कहैत अछि-बनरकूद।कहबाक तात्पर्य अछि जे सबसँ पहिने अपन गंतव्यक निर्धारण करबाक चाही आ तकर बाद संपूर्ण शक्तिसँ ओकरा प्राप्त करबाक प्रयास करबाक चाही।

एकटा बात तँ तय अछि जे सफलताक कोनो लघुपथ नहि भए सकैत अछि। आइधरि जे क्यो व्यक्ति सफल आदमीमे सुमार कएल जाइत छथि तिनक जिनगीसँ ई बात बुझल जा सकैत अछि।अपना देशक भूतपूर्व राष्ट्रपति कलाम साहेब अखबार बेचि कए पेट भरैतछलाह।वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीमहोदय नेन्नामे चाह बेचैत छलाह।एतेक विपन्नता अछैत ओ सभअद्वितीय कोना भए गेलाह? ई सोचबाक विषय थिक। एहन कम लोक होइत छथि जे सुविधाक अंबारमे जनमिओकए पैघ-पैघ काज कए यशस्वी होइत छथि। पैघ उद्येश्य जँ रखने छी तँ ताहि प्राप्त करबाक हेतु तेहने सघन प्रयासो चाही।अर्जुन जकाँ सभकिछु बिसरि मात्र पंक्षीक आँखिपर ध्यान केंद्रित हेबाक चाही आ जँ भीम भाइ जकाँ एकहिबेर सभ किछु देखए लागब तखन की भेटत? फोकला!

महान उपलब्धिक हेतु तेहने कड़गर मेहनति करए पड़ैत अछि।तेहने दृढ़ संकल्पक संग दिन-राति एक करए पड़ैत छैक।एहन नहि भए सकैत अछि जे हल्लुक परिश्रमसँ उत्कृष्ट उपलब्धि भए जाइक। अंग्रेजीमे एकटा कहाबत छैक जे “If wish be the horses, poor ride the first” कहक माने जँ इच्छे केलासँ होइक तँ गरीबे सबसँ पहिने घोड़ाचढ़ए।इच्छाक संग-संग प्रयत्नो तेहने घनघोर हेबाक चाही।

जेठक दुपहरिआमे जखन रौदसँ मोन आकुल भए जाइत अछि तखन होइत छैक जे कहुना गाछक छाहड़िमे चली।जखन पिआससँ मोन बेकल भए जाइत अछि तखन इच्छा होइत छैक जे हे भगवान! कहुना कतहुँसँ पानि भेटए। तखन लोक ई नहि देखए लगैत अछि जे पानि डबड़ाक अछि कि गंगाजल।केहनोपानि अमृत लगैत अछि।तहिना जीवनक संघर्षक तपिससँ मोन जखन व्याकुल भए जाइत अछि तँ लोक थाकल-ठेहिआएल कहि उठैत अछिः” हे भगवान! आब अहीं पार लगाउ”! संघर्षक समयमे भगवानपर विश्वास बड़का शक्ति दैत अछि। काज करैत रहू आ फलक चिंता हुनका पर छोड़ि दिअ, इएह बात भगवान गीतामे बारंबार कहने छथि। एहि काज करबाक शक्ति बढ़ैत अछि। कने-मने असफलतासँ निराशा नहि होइत छैक आ अन्ततः सफलता तँ भेटिते अछि।

मनुक्खकमोनमे परमात्माक बास होइत अछि। तेँ जँ ओ सही प्रयास करए तँ किछुदुर्लभ नहि रहि सकैत अछि। ताहि हेति जरूरी थिक जे लक्षयक प्रति पूर्ण समर्पण होइक। आधा-अधुरा मोनसँ कएलगेल प्रयाससँ सिद्धि नहि भए सकैत अछि। ई बात अक्सर देखल गेल अछि जे हम उत्तमसँ उत्तम फल चाहैत छी, जकरा ककरो लग किछुनीक छैक से हमरा लग किएक नहि रहत? हमसबसँ औअल किएक नहि रहब? से सभतँ ठीक, मुदा जखन प्रयास करबाक गप्प होइत अछि तँ हम पाछा रहि जाइत छी।

रामकृष्ण परमहंससँ एकबेर क्यो पुछलकनि जे भगवानक दर्शनकोना होएत? ओ ओहि व्यक्तिकेँ पानिमे डूबा देलखिन आ पुछलखिन जे आबकी चाही? ओ चिचिआए लागल-किछु नहि चाही, बस हमरा पानिसँ निकालु। ओकरा तुरंतपानिसँ निकालल गेल। पानिसँ बाहर अबितहिँ ओकरा कहलखिन जे जहिना पानिमे डुबि गेलाकबाद तोरा खालीपानिसँ बाहर हेबाक इच्छा रहि गेलह आओरकिछु नहि सुझाह तहिना जखन भगवानकेँ प्राप्त करबाक हेतु एकाग्र हेबह तँ ओहो भेटि जेथुन।एहने खिस्सा एकलव्यक अछि। गुरु द्रोणाचार्यद्वारा शिक्षा नहि देबाक निर्णयसँ आहत ओ गुरुक प्रतिमा बैसाए दिन-राति साधना करए लगलाह आ अपन लक्ष्यकेँ पाबि तेहन निपुण धनुर्धर भए गेलाह जे द्रोणाचार्यो घबरा गेलाह आ ओकरासँ अंगूठा मांगबाक नीचता कए गेलाह।

सफलताक कुंजी थिक, आत्मविश्वास। स्वामी रामतीर्थ एकबेर घोर जंगलसँ जाइत रहथि कि एकटा बाघ हुनका सामने आबि गेल। मुदा ओ बिना बिचलित भेनहि ओहि बाघक आँखिमे घुरैत रहलाह आ बाघ अपन रस्ता बदलि लेलक।स्वामीजीक आत्मविश्वाससँ बाघोकेँ रस्ता बदलि लेबाक हेतु विवश कए देलक।जौं हमरा विश्वास अछि जे हम ई काज कए सकैत छी तँ बुझि लिअए काज हेबे करत।देर-सवेर भए सकैत अछि, मुदा होएत।

मानव जब जोर लगाता है, पत्थर पानी हो जाता है।

जीवनमे सफल आदमीमे एकटा गुण सभठाम देखबामे आएत जे एहन लोकक रुखि सकारात्मक होइत अछि, ओ दोसरकेँ टंगघिच्चु नहि करैत छथि, अपितु अपन समस्त शक्तिसँ लक्ष्यकेँ प्रप्त करबाक हेतु लागल रहैत छथि।असफलतासँ ओ निराश भए बैसि नहि जाइत छथि अपितु आओर जोरसँ काजमे लागि जाइत छथि।एहने दृढ़ संक्लपी व्यक्ति कठिन सँ कठिन काजकेँ सरल बना लैत छथि आओर सफलताक पराकाष्ठाकेँ प्राप्त करैत छथि।q

मनः पूतं समाचरेत

जीवनमे बहुतरास अप्रिय, अरुचिकर घटनासब घटैत रहैत अछि।कतेको बेर ऐहन घटना घटित भए जाइत अछि जे मनुक्खकेँ हिला कए राखि दैत अछि मुदा एहने समयमे संस्कार ओ ज्ञानक परीक्षा होइत अछि। तकर अभावमे व्यथासँ विचलित लोक गलत रस्ता पकड़ि लैत छथि आ कै बेर अनर्थ कए बैसैत छथि।हालमे दिल्लीक बुरारीमे घटित लोमहर्षक घटना समस्त जागरुक व्यक्तिकेँ हिला कए राखि देलक।ऐकहिटा परिवारक एगारह गोटे दूपहर रातिमे फाँसी लगा कए मरि गेलाह। सभगोटे एकदम स्वस्थ छलाह। परिवार आर्थिकरुपसँ समृद्ध छल। राजस्थानसँ बीस-बाइस साल पहिने दिल्ली आबि कए ठीक-ठाकहालतमे छलाह।परन्तु की भेल जे पूरा-क-पूरा परिवार स्वयं फाँसीक फंदाबना झुलि गेल? जाँच-पड़तालमे ई बात आबि रहल अछि जे ओ सभ तंत्र-मंत्रक चक्करमे पड़ि गेल छलाह। हुनकासभकेँ ई अंधविश्वास छल

जे एहि तरहेँ मरलासँ हुनका सभकेँ मुक्ति भए जाएत।कहि नहि सत्य की छल मुदा भेल तँ अनर्थे। सभतरहेँ जूडल-अटल परिवार सदा-सर्वदाक हेतु नष्ट भए गेल आ सेहो धर्मक नामपर। तँ मनुक्खकेँ चाही जे आँखि खोलि कए राखथि। ककरो बातपर बिना सोचने-बिचारने विश्वास नहि करथि। सोचएबला बात थिक जे फाँसी लगा कए मरि गेलासँ मुक्ति कतएसँ भेटत। एहन सुन्दर जीवनकेँ व्यर्थमे गमा देब मूर्खता नहि तँ की थिक?

आँखि मूनिकए ककरो चेला भए जाएब कोनो हिसाबेउचित नहि अछि। आई काल्हि बहुत रास ढ़ोंगी बाबा सभ धर्मक नामपर लोककेँ ठकैत देखल जाइत छथि। ककरो बातकेँ बिना सोच-विचारकेँ नहि मानक चाही। अपन माथा जरुर लगाबक चाही।कहब छैक जे मनः पूतं समाचरेत। जखन अपन मोन मानि जाए तखने कोनो काज करी। अपन जीवन-यापन करबा जोग वुद्धि भगवान सभकेँ देने छथि।तकर सही उपयोग कएल जाए तँ बहुत रास दुर्घटना सँ बचल जा सकैत अछि। कहक माने जे अंधभक्त नहि हेबाक चाही।

बहुत रास लोकसभ फिरसान भए बाबा सभहक चक्करमे पड़ि जाइत छथि। एहन बाबा सभक आइ-काल्हि कमी नहि अछि।जतहिँ देखू, जटा-जूटधारी बाबा तृशूल चमकबैत भेटि जएताह।हुनका सभसँ बचिकए रही एहीमे कल्याण अछि। कारण ओ धन-धर्म सभ पर हाथ फेर दैत छथि।कै बेर तँ जानोसँ लोक हाथ धो लैत छथि।

सोचएबला बात अछि जे कै बेर पढ़ल-लिखल लोको एहन बाबा सभक चक्करमे पड़ि जाइत छथि।तकर की कारण? असलमे जखन लोक वास्तविकताकेँ नहि स्वीकार करैत छथि किंबा परिस्थितिसँ ताल-मेल नहि बैसा पबैत छथि, तखने एहन मानसिकता जोड़ मारैत अछि आ गलत-सलत काज लोक करए लगैत अछि। कहल जाइत अछि जे जँ अपना मोनक हो तँ नीक, जँ अपना मोनक खिलाफ भए जाऐ तँ आओर नीक।कारण जे अपना मोनक नहि भेल से बुझु जे भगवानक मोनक छनि किंवा हुनकर आदेश छनि, से बुझि आगतकेँ स्वीकार करैत आगा बढ़ि जाउ।जीवनमे नीक बेजाए होइत रहैत अछि। क्यो एहन व्यक्ति नहि भेटत जे सभ दिन नीके देखने होथि। नीक-बेजाए समयकेँ साहस पूर्वक झेलैत जे चलैत रहि जाइत छथि, बीच रस्तामे थाकि कए,हारि कए काजकेँ आधा-अधूरा छोड़ि नहि दैत छथि,वएह कीर्ति करैत छथि,यशक भागी होइत छथि।

सही रस्तापर चलनिहार व्यक्तिकेँ बहुत याचना होइत अछि। बच्चामे हमरासभ सत्य हरिश्चन्द्रक नाटक देखने रही। केहन,केहन दिक्कतिसँ हुनका सामना करए पड़ल। एकटा प्रसिद्ध राजा सत्यक रक्षा करैत-करैत भिखमंगा भए गेलाह।ई हालत भए गेलनि जे पुत्र रोहितक मृत लहासकेँ जड़ेबाक हेतु कोनो व्योत नहि गेलनि।ऐहन दारूण दुख भगवान ककरो नहि देथि।मुदा ओ सत्यक मार्गपर अडिग रहलाह आ अन्ततोगत्वा विजयी भेलाह। कहक माने जे जीवनमूल्यक रक्षाक हेतु जँ कष्टो सहए पड़ए तँ अगुतेबाक नहि चाही, अपितु दृढ़तापूर्वक न्यायक मार्ग पड़ चलैत रहबाक चाही।

अपना देश-समाजमे कमे एहन लोक होइत छथि जिनकासभ किछु बनल-बनाएल भेटि जाइत छनि।अधिकांश लोककेँ सभ किछु हेतु संघर्ष करए पढैत छनि।जीवनक मूलभूत आबश्यकता जेना आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य हेतु सेहो मोसकिल रहैत अछि। अधिकांश लोक तँ संघर्ष करतहि जनमैत छथि आ ओही हालमे दुनियाँसँ चलि जाइत छथि। किछु एहनो लोक छथि जिनका भगवान ततेक दए देने छथि जे

फुराइते नहि छनि जे की करी? एहन लोककेँ विवेकसँ काजलेबाक प्रयोजन अछि। जँ सही व्यक्तिक हाथमे संपदा आबि जाइत अछि तँ ओ बहुत कयाणकारी भए सकैत अछि, हजारो, लाखोक तायदादमे जरुरतमंद, दुखी, ओ आर्तलोकक जीवनकेँ बदलि सकैत अछि, मुदा से होइक तखन ने? लोकसभ अपने धरि सीमित रहि जाइत छथि आ तखन कहताह जे मोनमे शान्ति नहि अछि,फिरसान छी, आदि, आदि।

जरुरी एहि बातक अछि जे परिस्थितिसँ तालमेल बैसा कए चली।जाहि बातपर अपन बश नहि अछि तकरा स्वीकार करी एवम् जीवनमे आशावादी रुखि राखी। सभसँ जरुरी अछि जे ईश्वरमे विश्वास राखी।भगवानक घरमे देर अछि अन्हेर नहि अछि। अस्तु, धैर्यपूर्वक कर्तव्य कर्मकेँ करैत रहब तँ देर-सवेर जरुर सफलता भेटत।एहि बातकेँ ध्यानमे रखैत जीवन यात्राकेँ यथासाध्य शान्तिपूर्ण ढ़गसँ बिताबक चाही।

जीवनमे सही दृष्टिकोण एवम्आशावादी रुखि रखलासँ बहुत रास संकटसँ बचल जा सकैत अछि, कमसँ कम ढ़ोंगीबाबाक चक्करसँ तँ जरुरे बचब।अस्तु,सबसँ जरुरी अछि जे हमर बुद्धि शुद्ध होअए जाहिसँ हमसभ नीक-बेजाएक बिचार करैत जीवन यात्राकेँ मर्यादापूर्वक बितासकी।

दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं पिबेज्जलम्।
शास्त्रपूतं वदेद्वाक्यं मनः पूतं समाचरेत् ॥
-चाणक्य नीति

१११

ऐ **रचनापर अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

आशीष अनचिन्हार-

हिंदी फिल्मी गीतमे बहर-5

गजलक मतलामे जे रदीफ-काफिया-बहर लेल गेल छै तकर पालन पूरा गजलमे हेबाक चाही मुदा नज्ममे ई कोनो जरूरी नै छै। एकै नज्ममे अनेको काफिया लेल जा सकैए। अलग-अलग बंद वा अंतराक बहर सेहो अलग भ' सकैए संगे-संग नज्मक शेरमे बिनु काफियाक रदीफ सेहो भेटत। मुदा बहुत नज्ममे गजले जकाँ एकै बहरक निर्वाह कएल गेल अछि। मैथिलीमे बहुत लोक गजलक नियम तँ नहिए जानै छथि आ ताहिपरसँ कुतर्क करै छथि जे फिल्मी गीत बिना कोनो नियमक सुनबामे सुंदर लगैत छै। मुदा पहिल जे नज्म लेल बहर अनिवार्य नै छै आ जाहिमे छै तकर विवरण हम एहि ठाम द' रहल छी-----------------

1

"खिलौना" फिल्म केर ई नज्म जे कि मुहम्मद रफीजी द्वारा गाएल गेल अछि। नज्म लिखने छथि आनंद बख्शी। संगीतकार छथि लक्ष्मीकांत प्यारे लाल। ई फिल्म 1970 मे रिलीज भेलै। एहिमे संजीव कुमार, मुमताज, जितेन्द्र, शत्रुघ्न सिन्हा आदि कलाकार छलथि। ई फिल्म गुलशन नंदाजीक उपन्यासपर आधारित अछि।

तेरी शादी पे दूँ तुझको तोह्फ़ा मैं क्या
पेश करता हूँ दिल एक टूटा हुआ

खुश रहे तू सदा ये दुआ है मेरी
बेवफ़ा ही सही दिलरुबा है मेरी

जा मैं तनहा रहूँ तुझको महफ़िल मिले
डूबने दे मुझे तुझको साहिल मिले
आज मरज़ी यही, नाखुदा है मेरी

उम्र भर ये मेरे दिल को तड़पाएगा
दर्दे दिल अब मेरे साथ ही जाएगा
मौत ही आख़िरी बस दवा है मेरी

एहि नज्मक सभ पाँतिक मात्राक्रम 212 212 212 212 अछि। एकर तक्ती उर्दू हिंदी नियमपर कएल गेल अछि। बहुत काल शाइर गजल वा नज्मसँ पहिने माहौल बनेबाक लेल एकटा आन शेर दैत छै ओना ई अनिवार्य नै छै। एहि नज्मसँ पहिने एकटा शेर "तेरी शादी पे दूँ तुझको तोहफ़ा मैं क्या" माहौल बनेबाक लेल देल गेल छै। समान्यतः दीर्घक बाद बला "ए" केर उच्चारण लघु भ' जाइत छै आ मैथिलीमे सेहो एकर हम स्थितिनुसार लघु मानबाक सिफारिश केने छी।

2

खिलौना" फिल्म केर ई नज्म जे कि मुहम्मद रफीजी द्वारा गाएल गेल अछि। नज्म लिखने छथि आनंद बख्शी। संगीतकार छथि लक्ष्मीकांत प्यारे लाल। ई फिल्म 1970 मे रिलीज भेलै। एहिमे संजीव कुमार, मुमताज, जितेन्द्र, शत्रुघ्न सिन्हा आदि कलाकार छलथि। ई फिल्म गुलशन नंदाजीक उपन्यासपर आधारित अछि।

खिलौना जानकर तुम तो, मेरा दिल तोड़ जाते हो
मुझे इस, हाल में किसके सहारे छोड़ जाते हो

मेरे दिल से ना लो बदला ज़माने भर की बातों का
ठहर जाओ सुनो मेहमान हूँ मैं चँद रातों का
चले जाना अभी से किस लिये मुह मोड़ जाते हो

गिला तुमसे नहीं कोई, मगर अफ़सोस थोड़ा है
के जिस ग़म ने मेरा दामन बड़ी मुश्किल से छोड़ा है
उसी ग़म से मेरा फिर आज रिश्ता जोड़ जाते हो

खुदा का वास्ता देकर मनालूँ दूर हूँ लेकिन
तुम्हारा रास्ता मैं रोक लूँ मजबूर हूँ लेकिन
के मैं चल भी नहीं सकता हूँ और तुम दौड़ जाते हो

एहि नज्मक सभ पाँतिक मात्राक्रम 1222 1222 1222 1222अछि। एकर तक्ती उर्दू हिंदी नियमपर कएल गेल अछि। उर्दूमे दू दीर्घक बीच बला संयुक्ताक्षरकेँ एकटा लघु मानि लेबाक छूट सेहो छै मुदा ई मैथिली सहित आन आधुनिक भारतीय भाषामे नहि भेटत। उर्दूमे "और" शब्दक मात्रा निर्धारण दू तरीकासँ कएल जाइत छै "और मने 21" आ "औ मने 2"। एहि नज्मक संगे आन नज्म लेल ई मोन राखू। उर्दूमे "शब्दक बीच बला "ह" केर उच्चारण पहिल शब्दमे मीलि क' ओकरा दीर्घ बना दैत छै जेना कि "लहरि" केर उच्चारण "लैर" सन आदि, "मेंहँदी" केर उच्चारण तेहने भ' जाइत अछि। जरूरी नै जे ई नियम मैथिली लेल सेहो सही हएत।

3

"शक्ति" फिल्म केर ई नज्म जे कि लता मंगेशकरजी द्वारा गाएल गेल अछि। नज्म लिखने छथि आनंद बख्शी। संगीतकार छथि आर.डी.बर्मन। ई फिल्म Sept 22, 1982 मे रिलीज भेलै। एहिमे अमिताभ बच्चन, स्मिता पाटिल, दिलीप कुमार, राखी आदि कलाकार छलथि।

हमें बस ये पता है वो बहुत ही खूबसूरत है
लिफ़ाफ़े के लिये लेकिन पते की भी ज़रूरत है

(एहि दू पाँतिक मात्राक्रम अछि 1222 1222 1222 1222)

हम ने सनम को ख़त लिखा, ख़त में लिखा
ऐ दिलरुबा, दिल की गली शहरे वफा

(एहि स्थायीक मात्राक्रम अछि 2212 2212 2212)

पीपल का ये पत्ता नहीं, काग़ज़ का ये टुकड़ा नहीं
इस दिल के ये अरमान हैं, इस में हमारी जान है
ऐसा ग़ज़ब हो जाये ना रस्ते में ये खो जाये ना
हम ने बड़ी ताक़ीद की, डाला इसे जब डाक में
ये डाक बाबू से कहा हम ने सनम को खत लिखा

बरसों जबाबे यार का, देखा किये हम रास्ता
एक दिन वो ख़त वापस मिला और डाकिये ने ये कहा
इस डाकखाने में नहीं, सारे ज़माने में नहीं
कोई सनम इस नाम का कोई गली इस नाम की
कोई शहर इस नाम का हम ने सनम को खत लिखा

(उपरक दूनू अंतराक मात्राक्रम 2212 2212 2212 2212 अछि) एहि नज्मक ई विशेषता जे एहिमे "शहर" शब्दक गिनती हिंदी जकाँ कएल गेल छै अन्यथा उर्दूमे शहर केर मात्रा दीर्घ लघु होइत छै। एकर तक्ती उर्दू हिंदी नियमपर कएल गेल अछि।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

नीलमाधव चौधरीक 56 टा कविता

(प्रस्तुति आशीष अनचिन्हार)

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा विदेहक 218 अंकमे भेल छल जाहिमे आमंत्रित कवि छलाह नीलमाधव चौधरीजी एवं आमंत्रित आलोचक छलाह कैलाश कुमार मिश्रजी। कविता आबि गेल मुदा टिप्पणी किछु कारणवश नहि आएल। अंततः कविक 56 टा कविता देल जा रहल अछि। नीलमाधवजीक कविता यदा-कदा प्रकाशित होइत रहल अछि जखन कि लीखै छथि बहुत दिनसँ। मैथिलीमे तँ एहन रेवाज रहलैक अछि जे जँ परिवारमे कियो साहित्यकार भऽ गेल तँ पूरा परिवार अनुचित रूपें ठप्पा लागल साहित्यकार भऽ जाइत अछि। ओना एहि रेवाजकें तोड़बाक सेहो प्रयास भेल अछि जकर दृष्टांत प्रो. हरिमोहन झा पुत्र जनार्दन झा जनसीदन आ राजमोहन झा पुत्र प्रो. हरिमोहन झा केर उदाहरणमे भेटत। जँ नव उदाहरण देखी तँ ई रेवाज तोड़बाक साहस नीलमाधव चौधरी पुत्र राजकमल चौधरी केलाह अछि। आ से अही बातसँ बुझा जाइत अछि जे राजकमल चौधरीजीक घर देखबाक बहन्ने संस्मरण लिखए बला आ राजकमलजीक पोथीक संपादन कए कऽ संपादक बनल लोक सभ सेहो नीलमाधवजीकेँ आगू अनबामे असफल भऽ गेला आब से एकर कारण जे हो मुदा एकटा पाठकक तौरपर ई क्रेडिट हम नीलेमाधवजीकें देबनि जे ओ मात्र राजकमलजीक पुत्र हेबाक कारणे अनुचित लाभ लेबासँ अपनाकें कात कऽ लेलाह। एहिठाम नीलमाधवजीक 56 टा कविता प्रस्तुत करैत ईहो हम कहब जे पहिल बेर एहि कविक एतेक रास कविता एकै संगे प्रकाशित भऽ रहल अछि। एहिसँ पाठक आ समीक्षक दूनूकें सुभीता

हेतनि। पाठक आ समीक्षक दूनू लग एहि बारल कविक कविताक प्रवृति ओ प्रकृति एकै बेरमे बुझबामे एतनि। तैँ आउ रसास्वादन करी एहि कविता सभहँक---

1

ई उपराग के सुनत?

हम सब कतेक अभागल छी

अन्तिम दर्शन तक नहि कऽ सकलहुँ

ओहि दादी के जे नहि जानि

कतेक राति बिना नींद बीता देने होयतीह

एतबहि लेल कि हमर नींदमे बिघ्न नहि हो

ई दर्द हमरे नहि

आजुक सभ पोता -पोतीक दर्द अछि

मुदा कएल की जाय

दादी रहैत छथि कोनो कस्बा कोनो गाँवमे

कोनो अपन -कोनो आनक छाँवमे

पोता-पोती एडीलेड,बिस्बेन,वॉशिंगटन,स्विट्ज़रलैंड

बड्ड मुश्किल घुरि आयब अप्पन लैंड

कएक टा काज जे छन्हि बड्ड जरुरी

नहि करता तऽ जेतनि ई नौकरी

केहेन ई मंदा के युग छै से सभ बुझले छन्हि

पुनः कहाँ आबि हेतनि,सभ सुझले छन्हि

बउआ आ बॉबी के पढ़ाई साफ भऽ जयतन्हि

शिक्षक के बात कि बिद्यार्थियो बोकियतन्हि

एक तऽ ओनाहिये एतय निम्न बुझल जाइत छथि

जे अबैत रहैत छन्हि सेहो कहएमे धकाइत छथि

पता नहि कहिया धरि ई धाक छुटतन्हि

काश ई कारी चमड़ी हिनको उज्जर होइतन्हि

दादी के लेल कोना धिया पुता क जीवन बरबाद करी

बीतल काल्हि लेल आब' बला काल्हि कोना खराब करी

मुदा एकटा संशय जीवए नहि दैत छन्हि

दादी ओहो बनतिह से सोचि डर होइत छन्हि

दादी के तँ सब अपने छलन्हि देशमे

हम्मर कि होयत नहि जानि एहि विदेशमे |

2

जँ भेलहुँ पथभ्रष्ट

सब तरि बात अधिकार के

कर्तव्य नष्ट निर्मूल

न्यायक आस तँ

सब करैत अछि

कानून बनल अछि शूल

सत्य न्याय के बाटपर चलब

कखनहुँ कहाँ रहल आसान

जँ भेलहुँ पथभ्रष्ट तँ

फेर समाजक कतऽ कल्याण

सब धर्म केर मूलमे

एक मात्र परोपकार

एक दोसरसँ जुड़ल रही

होइत रहय सपना साकार

मुदा एहि वैचारिक

अकाल अन्हारमे

धिया पुताक पढ़ाइ कि

नून रोटीक जोगारमे

लोक-वेद , गाम घर

दुनियाँ समाज बिसरल छी

उचित अनुचितक विचार त्यागि

धर्मक मार्गसँ उतरल छी

एहनमे जिनगीक मर्म

कोना बाँचल रहत

बिना सत्य न्यायकेँ

धर्म कोना बाँचल रहत

3

हम तऽ ठीके छी:सत्ते ?

हम सब एतेक

कोना बदलि सकैत छी

जेना बदलि गेल छी

कोनो आकर्षण नहि

कोनो प्रतिरोध नहि

जे जेहन करता

से तेहन भोगता

बड्ड संतुष्ट,बड्ड सहज

बाप- भाय मीलि कऽ

बहिन- बेटी संग

नौ वर्ष तक

अस्सी सालक संत

सोलह साल कऽ कन्या

मुदा हमर खून

नहि खौलैत अछि

अपनापर नजर दौड़बैत छी

पहिनेसँ बेसी

सशक्त भऽ गेल छी

बेसी बुद्धिमान

(समय आ अनुभवकेँ देखैत, ओना तँ)

आ बेसी गुदकर

मुदा पहिनेसँ बेसी

असंतुष्ट

असुरक्षित

अपमानित

नहि फरछाइत अछि

प्रगतिक पथपर छी

कि अवनतिक पथपर ?

4

घनघोर अन्हरिया

जे बीति रहल

ताहिपर तँ कोने गरे नहि

दिन बीतलकँ कोना

बजा लैत छी

सजल अछि महल

रंग विरंगक प्रकाशसँ

चन्द्रमा अचंभित छथि

मनुक्खक प्रयाससँ

आँखिक पर्दा नहि किए

हटा लैत छी

राति घनघोर अन्हरिया

लोक सजा लैत अछि

सुख दुख बिसरि

दीवालीक मजा लैत अछि

दूर कतऽ अहाँ अपनाक

बझा लैत छी

हएत तँ वएह

जे एखन तक भेलै

सुरुज डुबल राति भेल

सुरुज उगलै भोर भेलै

राति दिनमे एना किए

मिला दैत छी ।

5

संयोग

ककरासँ प्रेम

ई कहेन वियोग अछि

हमर जिनगीक

ई केहन संयोग अछि

जकरासँ स्नेह करी

ओकरेसँ होइत संहार अछि

जकरासँ रहल विमुख

ओकरेसँ उद्धार अछि

6

आर कतेक दूर

भऽ सकैत अछि

बाहरक हवा किछ

दूषित होमय

किछ लोक अप्प्र

स्वार्थ लेल व्यथित होमय

मुदा बिन प्रयासे की

किछुओ भेटत

जे अछि कि सेहो

बाँचल रहत

ऐना जे खिड़की केबाड़

बंद केने रहब

हवा आ रोशनीपर

पैबन्द लगेने रहब

कहूँ कतेक दिन

हम सब सही सकैत छी

आर कतेक दूर तक

रही सकैत छी?

की इच्छा अछि

कतय छी उलझल

जागल छी कि

छी अहाँ सुतल

कतय जेबाक अछि

कतय जा रहल छी

मोनमे की अछि

की सुना रहल छी

अहाँ दैत छी ज्ञान पोथीकेँ

जे पोथी हम फाड़ि चुकल छी

संस्कारक पाठ पढा कऽ

हमरा किए अहाँ मारि रहल छी

हम मैथिल आब किछ नहि बुझब

अप्पन मिथिला लेल हम जुझब

बड़ड चुप रहलहुँ आब नहिं रहब

बड़ड दिन सहलहु आब नहिं सहब

7

नव एहिना पनपत

अछि तँ सब अंग

सुरक्षित

एना किएक

अपंग भेल छी

भरलहुँ तँ कतेक रंग

जिनगीमे

एना किएक

बेरंग भेल छी

की हित की बेजाय

कहाँ किछु स्पष्ट

तकैत रहलहुँ

मृग मरिचिका

भगैत रहलहुँ सरपट

आब देश दुनियाँक

हाल देखि

एना किएक

दंग भेल छी

नव एहिना पनपत

पुरानकेँ झरए पड़तै

झहरि कऽ जेहन

बीया खसत

तेहने ने पौध बनत

अपने रोपल गाछ अछि

तखन एहि छाँहसँ

एना किएक

तंग भेल छी

8

नव परिभाषा गढ़ि सकय

लिखल तँ जाइत अछि

मुदा एहन कहाँ

जे लोककेँ

पढ़ब सिखबितइ

जे पढ़ल छै

ताहिपर दृढ निश्चय

रहब सिखबितइ

सबकेँ लेल सब

एना किए कुक्कुर बानर

अपने बेगरते अछि

भेल विश्व आन्हर

सामने की परोक्ष

लोकक सम्मान कहाँ

जे भंगठि गेल तकर

कतहुँ निदान कहाँ

लिखल गेल

लोक लेल कि अपना लेल

नहि हमर प्रश्न

मुदा ई लेखनी

नहि रोकि सकल

समाजक पतन

निश्चिते जे लोक नहि

किछुओ पढ़ि सकल

निज स्वार्थक परिधिसँ

बाहर नहि निकलि सकल

चलू होय प्रयास जे

बेसीसँ बेसी

लोक पढ़ि सकय

जिनगीक सुंदर सन

नव परिभाषा गढ़ि सकय ।

9

मोनक तृष्णा

लगातार चारि दिनसँ

बरसैत पानि

अकच्छ भऽ गेल अछि मोन

ओना बारिसक मनभावन दृश्य

बड्ड नीक लगैत छैक

मुदा कखन

जखन पेटक भूखसँ

मोन व्यथित नहि हो

जखन कोनो घावसँ

देह पीड़ित नहि हो

जखन नव तरुणि संग

यौवन उमड़ल हो

मोनमे उल्लास होमय

जेब भरल हो

मुदा एखन

अहि अकलबेलामे

जतय नून रोटी जुटेबाक

समस्यामे

प्रतिभाक एक-एक टा काठी

जड़बए पड़ैत छैक

जतय रोज बापक बीमारी

मायक फाटल साड़ी

बहिन-बेटीक बढैत उम्र

चारु कातसँ घेरने रहैत हो

कोना लिखी सकैत छी

अपन प्रेयसी पत्नीक

हृदय सागरक अथाह प्रेम वर्णन

जीवन-आनंद के सूक्ष्म पवित्र दर्शन

जतय फूल बनबासँ पहिने

झहरि जाइत अछि

कोमल-कोमल कोढी

वृक्ष बनबासँ पहिने

सुखा जाइत अछि प्रेमक गाछ

कोना लीखि सकैत छी

श्रृंगारक कविता, प्रेमक गीत

ओना जाड़क उन्मुक्त राति

बड़ड प्रियगर

देहक पोर पोरमे जागृत करैत अछि

कामोवासनाक आगि

जगा दैत अछि

अंतर्मनमे नुकायल

मनलग्गु दैत्यकेँ

मुदा भवनाक लहरि तोड़ि दैत अछि

यथार्थक क्रूर बोध

काँपी कलम हाथसँ छुटि जाइत अछि

यथार्थ कविक कल्पनाक सीमा

नाँघि जाइत अछि

चारि जोड़ी आँखि

टुकुर टुकुर हमरे देखि रहल छल

हम चुप- चाप घरसँ बहरा जाइत छी

कोनो जोगार, कोनो व्यवस्थामे

भीजल तीतल अवस्थामे

अपूर्ण कविता अपूर्णे रहि जाइत अछि

मोन क तृष्णा प्यासल, हारल, थाकल, निराश

मोनहिमे दबि जाइत अछि |

10

एखन तक तँ अछि

ई दवाई अछि

कि गरल

ई तँ समय बताएत

मुदा ई निश्चित जे

दिन बीतल

नहि लौटि पाएत

एखन तक तँ छी

लाइनमे लागल

डर अछि जे

लाइन नहि बिगड़ि जाय

एखन तक तँ अछि

भूख प्यास जागल

डर अछि जे

भूख प्यासे नहि मरि जाय

11

सएह टा बात कोना भऽ सकैत

हम सब बड्ड नीचाँ धसि गेल छी

आ भगवान बड्ड उपर चलि गेलाह

नहि भजन सुनैत छथि

नहि आँखिक नोर देखैत छथि

ठीके कलयुगमे आबि

भगवानो बदलि गेलाह ,

ततेक जल्दी वातावरण

कि प्रयोजन बदलि जाइत अछि

उपराग दैत-दैत

गारि, प्रार्थनामे बदलि जाइत अछि

तखन कथि लेल एतेक व्यग्रता

तखन कथिक एतेक प्रसन्नता

तँ की हम सभ माटिक मुरुत बनि

पड़ल रही

बरू किछु होइक दुनियाँमे

कम्बल ओढि सुतल रही

भगवान दूर नहि बड्ड लग आबि गेल छथि

क्रिया कलापक फल तुरंत दऽ दैत छथि

कहाँ कोनो एहन नीक कर्म छल

जे नीक भाग्य भऽ सकैत

हमरे जे जे नीक लागय

सएह टा बात कोना भऽ सकैत |

12

कते कम अछि

भ्रममे अछि

जिनगी

कि जिनगिये

भ्रम अछि

सब तरि

पसरल अछि

अनर्थ केर

ठहाकाक गूँज

देख लिअ

सबहक आँखि

मुदा नोराएल अछि

कतेक दिन

बीत गेल

एक छनक

मुस्की लेल

हँसीक लेल

ठीके ई जिनगी

कते कम अछि

13

बजट के भ्यु की

ई सावन के घटा

ई मन भावन छटा

बिहुँसि बिहुसि डारि-पात

गाछकेँ डोला रहल

गाछक व्याकुल मोन

मुसलाधार बरसात देखि

जड़िकेँ आजमा रहल

डाँड़ भरि डुबल गाछ !

फल-फूलसँ भरल गाछ |

कहियासँ लाल किला

ओहिना ठाड़ अछि

देखलक कतेको प्रधानमंत्री

कतेको प्रधानमंत्रीक

अनेकानेक बेर बदलल रूप

परिस्थितिजनक रूप

कहियो कोनो राज्य मुख्य मुद्दा

तँ कहियो कोनो ,

कहियो साउथक चर्चा

तँ कहियो सिर्फ नोर्थ ईस्ट

कहियो शिक्षा कहियो व्यापार

कहियो कलाधन कहियो भ्रष्टाचार

बात तँ कहलहुँ बड्ड नीक

छोट मोट नौकरीक लेल इन्टरव्यू की ?

जखन परीक्षा इंटरव्यू लेबहे पड़त

तखन शिक्षा के बजट के भ्यु की ?

शिक्षा आ स्वास्थ्य

ई दुनू सेवा सिर्फ सरकारी हो

नहि कोनो जाति धर्मक भेद

नहि गरीबी अमीरीक फर्क

नहि कोर्समे कतहुँ कोनो विविधता

शिक्षा व्यापार नहि

नहि शिक्षक व्यापारी हो

नहि डाक्टर साक्षात यमराज

नहि रोग कोनो महामारी हो

शिक्षाक अर्थ पाइ कमाबय नै

बनब संस्कारी हो

मोदी जी एहि शापित शहरी जीवनमे

चमक दमक मॉंलमेट्रोक कृत्रिम तिलस्ममे

ओझरा गेल अछि मनुक्ख

ताहिपर ई एहन झमठगर बरसात

राजीव गांधीक "करेंगे, करेंगे"

एखन तक रेंगिते अछि

ई आश्वासनक

हरियरी तँ ठीक मुदा

एतेक नहि जे गलि जाय

उत्कंठा उत्सवक बीच

देखब कर्तव्य मर्यादा

नहि बिसरि जाय |

14

दीपसँ अन्हार

दीपसँ दीप

नेसल जा सकैत अछि

दीपसँ अन्हार

मिटाओल जा सकैत अछि

दीपसँ इजोत

आनल जा सकैत अछि

मुदा ई अन्हारसँ

दीप जड़ेबाक कोशिश

ई अन्हारसँ अन्हार

भगेबाक कोशिश

एहि धुआँमे तँ

दीवालीक इजोतो बेकार

दीया तँ नेसलहुँ

आँखि खुलबा लय कहाँ तैयार ।

मोनमे जोशे नहि

सजल अछि घर संसार

जेबमे खिद्दी नहि

विदा भेलहुँ हाट बाजार

बिना युद्धे सीमापर

नित्य शहीद होइत जवान

हवामे प्रदूषण

मुश्किल अछि बचनाय प्राण ।

15

नहि रहल हँसबा, कनबाक समय

कहिया खुलिक हँसल रही

नहि याद अछि

खूब जोर दैत छी दिमागपर

कहाँ याद अबैत अछि

कोनो खुशीक बात

भेले नहि हो, से तँ नहि

सवा करोड़ लोकक देश

तीन सौ पैसठ दिनमे

तीन सएसँ बेसि पाबनि-तिहार

समाज परिवार सेहो कम झमटगर नहि

राष्ट्रीय कि सामाजिक कि व्यवसायिक

कतेक तरहक मनमोहक कार्यक्रम

कतेक ब्याह दान, जन्मदिनक सुअवसर

कहाँ खुलिक हँसि पयलहुँ

मोनमे ई विचार चलिते छल कि

तखने मोनमे नव प्रश्न उठल

खुलिक कानल कहिया रही

कएक टा एहेन घटना भेल जे

हृदयकेँ अत्यधिक चोट देलक

जुआन, बच्चा, हित-परिचितक मृत्यु

देखबा, भोगबा लेल विवश भेलहुँ

रोज सीमापर जवान तँ

खेत देखि किसान

शहीद होइत देखि सुनि

मोन आक्रोशित भेल

दू-चारि बूँद नोरो टपकल

खुलि कऽ कानि कहाँ सकलहुँ

बुझाइए आब नहि रहल

हँसबा, कनबाक समय

आब नहि रहल कोनो बातक

हर्ष-विषाद, चिंता कि विस्मय

16

मोन छोट कऽ दैत अछि

जहिना जहिना रंग

चढैत छै

तहिना तहिना उतरय छै

ई दुनियाँमे सिद्ध बात जे

जे फड़य से झहरय छै

तखन ई रस्ता तँ

अपने चूनल अछि

आब गडल काँट तऽ

माँ मोन पड़ैत अछि

नहि गाउ फगुआ

नहि कोनो रंग लगाउ

एहि गीत एहि रंगसँ

गामक गमक अबैत अछि

नहि जानि किएक

ई पाबनि तिहारि

मोन छोट कऽ दैत अछि

खुशीक एहन सन मौकापर

मोन वेदनासँ भरि दैत अछि

असगरे बुझाइत छी

अछि भरल घर आँगन

आब की हर्ष विषाद

नहि रंग कोनो एहि आनन

अछि बुझल नहि छै कत्तो खुशी

मुदा छी हम प्रतीक्षामे

परिणाम तँ बुझल अछि

लागल छी परीक्षामे

17

माँ किछु नहि बाजल

मोन होइत अछि

पड़ा जाइ , भागि जाइ

मुदा कतऽ आ किएक

एहने सन स्थितिमे

मायक कोरासँ प्रिय

कहाँ किछु रहैत छैक

एखनो याद अछि

एक-एक शब्द

एहिना बाप भागैत भागैत

चलिये गेलखुन

तहूँ भागि जेबह तँ भागि जा

हमर की

जकर देहरिपर रहबय

घिसियाक फेकिए देत

याद अबैत अछि

कहियो माँक जेवर लऽ कऽ

भागि गेल छलहुँ बम्बई

मुदा नहि साहस भेल

देखबितअइ

कोनो सोनारकेँ

प्राते भेने लौटि कऽ आबि गेल रही

माँ किछ नहि बाजल

नहि तमसायल

नहि कनियो आँखि नोरेलै

दुनियाँक सातम आश्चर्यसँ

कम नहि

माँ हमर एहने छल |

गाम गाम थिक

भारतक कोनो गाम हो

एक दिन एहिना पहुँचि गेल रही

गाजियाबादक समीप

रावणक गाम विशरख आ

राजेश पायलटक गाम वेद्पुरा

कम्पलेन भिजिट छल

संगमे कम्पनीक इंजिनीयर,

ड्राइवर, गाडी

शर्मा जी जतबे कुशल किसान

ततबे कुशल व्यापारी

बात फरियने नहि फरियबय

क्लेम पचास के

पाँचो मुनासिब नहि

शर्मा जीक मृदुल स्वभाव ,

सत्कार स्वागत देखि

ई तँ निश्चित जे

शर्माजीक नुकसान नहि होइन

मुदा अपन प्रतिष्ठा

आ कम्पनीक प्रति निष्ठा

सेहो देखनाय जरूरी छल

अंतत: सब बात ठीके रहल

मुदा जे मूलता: आकर्षित कयलक

ओ छल ग्रामीण समाज

एखनो ग्रामीण समाजमे

पर्दा अछि प्रेम अछि

अक्षर बोध भने नही होय

मुदा बचल संस्कार अछि

ज बिगड़ल अछि किछुओ तँ

ओ सरकारी संस्था कि

सरकार अछि

चारि पाँच घंटाक बीच

जाहि तरहक परिवेश देखलहुँ

गाम घरसँ हजारो मील दूर

मिथिले सन कोनो देश देखलहुँ

किछु बात जरूर अजगुत जे

इंजिनियर सिन्हा जीकँ पसिन्न नै

कुमार-वार छथि

एतनि रातिमे निन्न नै

मौगी सब मुँह तँ झपने छल

मुदा छाती उघार छलैक

व्यवहारमे शालीनता

बोली लट्ठमार छलैक

बहुत किछ अन्तर होइतहुँ

मिथिलेक कोनो गाम सन

लाल काकीक अँगना

फढुँआ काकाक मचान सन

कएक बेर कदीमा साबुत कि

कदीमाक फूल

तरूआ लेल लऽ गेल छी

याद आबैत छल स्कूल

ई तँ छल उजड़ल प्रदेशक

उजड़ल कोनो गाम

अपन मिथिला तँ स्वर्ग अछि

ओहिना ने कहाइत अछि

ई मिथिला धाम

तखन बात पहिलुका

आब कहूँ कोना रहत

गाम की शहर अपने नहि

पेट रहैत अछि

पेटक संग कएक टा जुड़ल

घैंट रहैत अछि

19

रहल अछि रौदी-दाही

अन्हार आ इजोत

जरूरी तँ दुनू अछि

जखन जकर प्रयोजन

तखन से भेटत कोना

राति केर दिन केलहुँ

दिन केर राति

आब समयानुसार

सुरूज चान उगत कोना

खेत-खरिहान छूटल

कलम बाग निपत्ता

अँगना दलान छूटल

खत्म भेल पोखरि खत्ता

आब हवा पानिकेँ

संरक्षण, शुद्धिकरण चाही

दुनियाँ तँ ओहिना के ओहिना अछि

सब दिने रहल अछि रौदी-दाही

तखन एना किएक

एको बेर मुँहपर

मुस्की नहि अबैत अछि

छोट छोट बातपर

लोक कते पैघ पैघ

लड़ाइ लड़ैत अछि |

20

माँ मने महिषी

जखन जखन

ठेस लगैत अछि

मोन पड़ैत अछि माँ

माँ मने महिषी

माँ मने मिथिला

माँ माने तारा

माँ मने शीतला

माँ मने गंगा

मोन भेल चंगा

माँ के चरणसँ पवित्र

आर किछु कहाँ

माँ बिन दुनियाँमे

सुख कतहुँ कहाँ |

21

पैघ-पैघ लक्ष्य अछि

जे कष्ट छल

से तँ रहिये गेल

झुट्ठे फुसलेबाक

कोशिश करैत अछि

कखनहुँ एम्हर

तँ कखनहुँ ओम्हर

टहलेने अछि

अनेरे अजमेबाक

कोशिश करैत अछि

जंग लागल छै सत्ता

जर्जर छै भेल तन्त्र

चाही पारदर्शिता

डेगे-डेग भरल षड्यंत्र

सब चोर संसदमे

मुलुर-मुलुर तकैत अछि

शाहक शाह जोड़ी कि

कियो आने फसैत अछि

पैघ लक्ष्य छै

कने कष्ट बरदाश्त करू

ऊँच-नीच छोड़ू

एकताक बात करू

मामला गंभीर छै

नित्य बुझेबाक

कोशिश करैत अछि

22

नमन करू संस्कृति संस्कारकेँ

आजुक नेना नेनपन बिसरल

माय बापसँ रहत छिटकल-छिटकल

वजन बराबर बस्ता उघय

मध्य रात्रि तक तैयो नहि ना उघय

डर मैडमक करेजमे पसरल

नहि रहय जागल नहि रहय सूतल

बंद करू एहि शिक्षा व्यापारकेँ

नमन करू संसकृति संस्कारकेँ

23

ककर दोष?

अन्हरिया रातिक एहि शून्य बेलामे

कहियो जन्म लेने छलाह

कारी कृपा निधान कृष्ण

पाछा देखैत छी

बस हमर पदचिह्नक स्वर

कतेक आगू आबि गेल छी

कि लौटब संभव ?

आगू अथाह दुर्गम बाट

हमारा असगरे पार करए पड़त

एहि गँहीर सागरकेँ

एकटा आमक गाछपर नजर जाइत अछि

आह केहन मधुगंध बरसा रहल छल

पल-छिन लेल मोन भावविह्वल भऽ गेल

परन्तु हवाक तीव्र झोंखासँ खसि पड़ल

बहुत रास आम्र मज्जर

आह वएह खसल मज्जर तँ नहि हम

सत्ते कते क्रूर अछि प्रकृति

ना ना नाहि नाहि ?

ककर दोष?

ओकर वाल्यपन के की ई हवाक झोंखा के

नहि सोचि पबैत छी हम

हमर दोष की युगक प्रवाहकेँ ?

24

दीप चाहे कतहुँ जरय

जिनगी ककरा कहैछ

जिनगीक माने की

लोक उजड़ल सभ ठामसँ

हमहीं अहाँ नहि उजड़ल छी

मुदा फर्क अछि

जेना हम सब बसल रही

की तहिना आनो आन

बसल छल ?

परिवर्तन

जीवनक मूल अछि

सामर्थ्यवानक लेल

समय सदैव अनुकूल अछि

मुदा ई सामर्थ्य

ककरो संग कतेक दिन

बालपन,जुआनी आ वृद्धावस्था

जहिना सत्य

तहिना ध्रुवसत्य जे

अन्तिम साँस तक

अप्प्न भाषा , अप्पन माँटि पानि

अप्प्न लोक-वेद अपने अछि

हाँ एतबा जरूर जे

विकासक भीषण छद्म

मानवताकेँ झँपने अछि

होइक सम्मिलित प्रयास जे

मिथिला मैथिली बाँचल रहय

इजोत सब तरि हेबाक चाही

दीप चाहे कतहुँ जरय |

25

ओकर जीवन

राति अन्हार अछि

मायाक संचारसँ

सर्वत्र ई प्रचार अछि

लोकलाजसँ वंचित

हमर ई व्यापार अछि

लोक जे कहय

हमर जीबाक आधार अछि

नइ चाहैत करैत छी

नित्य पाप

अछि जीवन हमर

बनल अभिशाप

नहि जानि ककर ई

पड़ल श्राप

यैह जीवन अछि

यैह दुख:संताप

26

बीच मुहान छोड़ि कऽ

आँखि लगले छल

ओ कहलनि

भोर भऽ गेल

नाम सुनतहि भोरक

मोन घोर भऽ गेल

एना किएक

जे रातिए राति

नीक लगैत अछि

बीच मुहान छोड़िक

कोन कात

ठीक लगैत अछि

सब तरि

पसरि रहल अछि आगि

आ मोम

भेल जा रहल छी

आकांक्षाक बजार गरम

जेब नरम

रूकब कि झूकब

कहाँ ककरो मंजूर

पाछू लागल आगि अछि

बस उड़ल

जा रहल छी |

27

नहि अप्पन नहि आन करू

एखन तक तँ

बात, मात्र

जोड़ए केर कएल गेल

तखन तँ ई हाल

घरोमे बिलायल छी*

आ तोड़ब

तँ तोड़ब की

लोक अपने

टूटल अछि

बीझो केर बाटमे

नहि कतहु ब्राह्मण

भूखल अछि

उनटे निमंत्रण भेल

पराभव छय

छूट्टीक बात माने

नौकरी ताकब छै

अंश भरि ओहि

योगदानक सम्मान करू

माँ मैथिली बसथि हृदयमे

नहि अप्पन नहीं आन करू

(*दरभंगो, सहरसामे लोक मैथिली नहीं बजैत अछि)

28

किछु एहिना बीतैत अछि

किएक नहि बुझैत छी

मधुश्रावणी, पंचमी

किएक नहि बुझैत छी

छोड़ि किछु लक्ष्मी

किएक नहि डर

बाढि , भूकंपसँ

किएक नहि डर

भय , आतंकसँ

किएक नहि डर

आक धथूरसँ

किएक नहि डर

देवता पितरसँ

किएक तँ हमरा

फुरसति नहि

जिनगीक बबालसँ

जीविका की चकारी

की पारिवारिक जंजालसँ

किछु एहन सन

जिनगिक हिसाब-किताब

व्यर्थमे व्यस्त रहू

जबरदस्त तनावग्रस्त रहू

दिन रति एक केने छी

मुदा बिन ककरो से नेने

नहि कोनो

महीना बीतैत अछि

छोड़ू की सूनब

बहुत लोकक जिनगी

किछु एहिना बीतैत अछि ।

29

नहि पछाड़ि सकलहुँ निन्न भूखकेँ

खूब बुझैत छी

किएक नित दिन

बढैत जाइत अछि चपलता ,

किएक नहि पूर्ण भेल

हमर सेहन्ता

कहाँ कहियो खुलि कऽ

जिनगीक भार

सम्हारि सकलहुँ

निन्नेमे सब स्वप्न

जरि कऽ खाक भेल ,

खूजल आँखियो कहाँ

कनियों निहारि सकलहुँ ।

जिनगीक असंख्य रूप

लोको रंग विरंगकेँ

कोनो रंगमे नहि

मुदा अपनाकेँ

निखारि सकलहुँ

जे भेटल से रूचल नहि

जे रूचल से पचल नहि

अपने निन्न भूखकेँ

नहि पछाड़ि सकलहुँ

30

माँ मैथिली अहाँकेँ

कोना बिसरि सकैत छी
माँ मैथिली अहाँकेँ
कतहुँ जे कियो भेटैए
अहाँकेँ
नहि गेल देखल
छौंड़ा भूखल
भागि एलहुँ परदेश
भेट गेल नमहर झोरा
जे नहि भरैत अछि कहियो
हम गदहा घोड़ा
मुदा तँइ कि, माँ मैथिली
अहाँकेँ बिसरब
कतए जाएब फेर कहू माँ
जँ फेर हम खसब
हाँ दुःख अछि जे भेटल हमरा
शिक्षा संस्कार
नहि भेटि रहल धिया पुताकेँ
ओ सुदृढ़ आधार
नहि बुझि रहल अछि ओ
अहाँक महिमा उद्गार
नहि जानि किएक नहि भेल
अहाँक प्रचार प्रसार
एहि दोषक प्रायश्चित
कहू माँ
कोना की कएल जाय
जे जेना जाहि मजबूरी
बिसरि अहाँकेँ बैसल छथि
हुनका घर बजायल जाय ।

31

लोक परेशाने टा भेटत

तीव्र गतिसँ
भागल जा रहल अछि समय
नहि पकड़ि पबैत छी
जीवनक सुर ताल लय
परिवर्तन तँ संसारक
शाश्वत नियम अछि
ई रूकत से तँ संभव नहि
मुदा सार्थक बीतय
से किए नहि भ रहल अछि
रात अन्हार दिन अन्हार
भोर साँझ कहाँ भऽ रहल अछि
किएक मोनमे बात जे
मात्र नुकसाने टा भेटत
जिम्हरे कदम बढ़ाएब
लोक परेशान टा भेटत
किएक नहि मोनमे आस
जे सभ बिहुँसैत भेटत
किएक नहि ई विश्वास
जे लोक बाट तकिते भेटत
लोक निर्मल अछि
मिथिलाक
प्रेम सत्कार बचल अछि
माँ मैथिली के कृपासँ
लोक लाज बचल अछि
मूल मुद्दा मुदा जे
पलायन रोकब कोना
जे बिसरल छथि कुल-शील
हुनका टोकब कोना
छुटतहि कहता
कहू किछु अपराध भेल
जीबि रहल छी

की ई नहि विश्वास भेल
कोना बुझता की कहियनि
किएक
नोयडा सन बंजर जमीन
सोन भेल अछि
अर्थतंत्रक चक्रव्यूहमे फँसि
प्रतिभा मोन भेल अछि
32
मोन परतारि रहल छी

बात एतबे सत्त
जे सभ झुट्ठे
घूमि रहल अछि
नीक कि बेजाय
जे बुझायल अप्पन
तकरे चूमि रहल छी
मुदा एहि छन
किछ भेल परिवर्तन
बड्ड जल्दी बदलि गेल
आन आ अप्पन
कतेक सम्बन्ध लुप्त भेल
कतेक नव गढल गेल
ओहि लुप्त सम्बन्धकेँ
एहि गढ़ल नव रूपसँ
जिनगी सम्हारि रहल छी
हरियर पीअर बातसँ
मोनकेँ परतारि रहल छी |
33

गप्प

अन्हारमे अन्हारक गप्प
हमर अन्हारसँ
हुनकर अन्हार
बेसि घनगर

बेसि प्रियगर
अन्हारमे होइत अछि
नाना तरहक घटनाक्रम
अन्हारमे होइत अछि
पैघसँ पैघ पराक्रम
एहन उदारता
एहन समानता
कतहुँ नहि
केहनो पुरान गुरू
केहनो नव शिष्य
सबहक सामने
एके रंगक दृश्य
सबके एकेटा दुःख
कोना एहि अन्हारमे
मात्र अपने लेल
अपने टा लेल
इजोत आनल जाय
ईश्वरसँ कि सृष्टिसँ
अपन सुरक्षा
मात्र अपने टा सुरक्षा
माँगल जाय
कोनो दधिचि ,कोनो कर्ण
कोनो भीष्मक अराधनामे
लागल अछि विश्व
कोनो न कोनो साधनामे
मुदा आब ओ दधिचि कि
दानवीर कर्ण कहाँ
मानव धर्मे विश्वास होय
आब से वर्ण कहाँ ?

34
कहैत तँ छलैए ई विश्व अप्पन

आखिर ई हाल किएक

पिछला किछु समयमे
जहिना घृणित लोकक
संख्या बढ़ल अछि
तहिना नीक लोक
धन प्रतिष्ठाक लोभमे
खराब बनबा लेल बेचैन
भेल छथि
ढीठपन तँ देखियौन
जे सबकेँ बुझल बात
परिणाम कोनो हाले नीक नहि
सेहो विकासक नामपर
नीक भऽ जाइत अछि
जाती धर्मक बात छोड़ू
सब घर बाँटल अछि
मन्दिर-मस्जिद तँ
चमकि दमकि रहल
गीता-कुरान नाथल अछि
भूकंप त्रासदीसँ पार पेबाक
कोशिशमे नेपाल
ओह, ताहिपर आब ई बबाल
मोन भेल उद्वेलित अछि
एहन ज्ञान , एहन प्रगति
कहू कतए केर रहि गेलहुँ
कहैत तँ छलैए ई विश्व अप्पन
घरक तँ नहि अप्पन रहि सकलहुँ?

35

भरोसपर जीबि लीअ

स्वाद जिनगीक
देखू आब बदलि गेल अछि
माउस छोड़ि दियौ
आर सोनित पीब लीअ
महीना दू महीनामे

एक दिन बनत रोटी भात
बाँकी दिन गोलीक
भरोसपर जीब लीअ
जँ चाही मॉल मैट्रो
पिज्जा बर्गरक जिनगी
तँ बेसी नहि एतबा करू
मोनकेँ मारि लीअ
मूँहकेँ सीबि लीअ

36
पाथरपर बसंत

आयल बसंत मुदा
भेल कहाँ कष्ट केर अंत
छिड़िआयल डेग डेगपर
ओहिना अछि बाधा अनन्त
कोनो बातक असरि नहि
एहनो कतहुँ भेलैए
पाथरपर कहूँ
बसंत एलैए
ज्ञान-बोध कुंठित
ताकि रहल छी मेवा
सब तरि तकैत छी माँकेँ
अछि बिसरि गेल सेवा
एहि हालमे ककरो
संपूर्ण सुख भेटलैए
पाथरपर कहूँ
बसंत कतहुँ एलैए
फूल बनबाक कहाँ
सेहन्ता बचल अछि
गाछ काटि प्रगतिक सड़क बनै
सभक इच्छा बनल अछि
कल्पनाक सागरमे
नव नव कमल फुलाइए

पाथरपर कहूँ
बसंत कतहुँ एलैए
अछि उपजल मधुबन
बस काँट कूस भारी
काल कोठरीमे बंद
गरीबक सोहारी
कहाँ ओकर चूल्हिसँ
एखन धधरा उठलैए
पाथरपर कहूँ
कतहुँ बसंत एलैए
चाही बसंत तँ भाय
गाछ फूल बन पडत
बिसरि कुड़हरि टेंगारी
मज्जरसँ देह भरए पड़त
फूलक जिनगीमे कहूँ
कतहुँ काल्हि भेलैए
पाथरपर कहूँ
कतहुँ बसंत एलैए

37

कहाँ ओ मनुक्ख

किछुए दूर तक
जेहन चाहैत अछि
तेहन बाट चुनैत अछि
मुदा किछुए दूर तक
फेर कहाँ
बाट कि जिनगी
अप्पन रहैत अछि
सोन बेचि
माटि खयबा लेल
होइछ विवश
फेर कहाँ ओ मनुक्ख
कहूँ मनुक्ख रहैत अछि

38
आँचर तर सहेज

मुंडे मुंडे मतिर्रभिन्ना
दिन राति आफत भेल दूना
आब आफते के
भाग्य मानि बैसल छी
कोरो तक जाड़ कऽ
खएबामे नहि संकोच
हाल सुधरत से
निश्चय जानि बैसल छी
बिहारक नामपर
मिथिलाक बद्ध भेल
मैथिल सब नेता भेला
लोक करबद्ध भेल
सेंट्रलमे ललित बाबूक
छवि छल महान
छलल गेला अपनेसँ
विधिक छल विधान
मुख्य मन्त्री मिश्राजी
मैथिलसँ भरल बिधान सभा
मधुबनी दरभंगा छुटि गेल
बिसरि गेल लोक सौराठ सभा
तकर बादक तँ फेर पूछू नै
केहेन ने केहेन कांड भेल
बिकाय लागल पटना स्टेशन
श्वेतनिशा उर्फ बाँबी हत्याकांड भेल
ललित बाबू छोड़ि
नहि कियो देलनि मिथिलापर ध्यान
भोट लेल बस मिथिला प्रेम
पाग पहरि शुरू करथि अभियान
मिथिलाकेँ अछि मैथिले बिसरल
नहि आनकेँ मिथिलासँ परहेज
बेटे त्यागथि बूढ मायकेँ

जे रखलनि आँचर तर सहेज |

39

काजर भरल नयनकँ देखू

काजर भरल नयनकँ देखू
कि देखू पूर्णिमाक चन्दा
देखब पीठ पाछु कियो करय ने निन्दा
कारण ऐखन देशक गरामे लागल छैक
फाँसीक फन्दा
झंडा फहराबैत देशक राजनेता
राष्ट्र-गान गबैत भुखल प्यासल जनता
बुझैत नहि पुरल स्वतंत्रताक सेहंता
नेताजीक संग तँ देबहे पड़त
देश समाजक तँ
वएह छथि भाग्य नियंता
तिरंगा जे प्रतीक अछि स्वाधीनताकँ
ओकर हरियर आ केसरिया रंग तँ
ओहिना गाढ़ अछि
मुदा उज्जर रंगक आगू
जेना कियो ठाढ़ अछि
सत्ते गौर करियौ वएह भ्रष्टाचार अछि
जतैक दबबैत छी
ततबे बढ़ल जाइए
मौनमे उठैत अछि विचार
देशक लेल करी किछु काज स्वीकार
मुदा धरमक सेवक छी
करू कोना अत्याचार
मुदा आब जंगमे आबय पड़त
सुतल धरतीकँ जगाबए पड़त
दुष्ट दानवक पराजय लेल
उठबए पड़त कटार
पाबय लेल निज अधिकार

अपने अपन हंता

सहजतासँ नहि
किएक
किछुओ मोन
स्वीकार करैत अछि
किएक बुझाइए
सबके संग
सब, बस
व्यापार करैत अछि
बात
एक एक टा गंभीर
मुँहपर
गजब केर चिन्ता
हृदय ततबे बहीर
अछि बनल
अपने अपन हंता
करत ई कलम की
जँ सामने
तरुआरि अछि
नियम तँ सब नीके
कहूँ के
मानए लय तैयार अछि
अड़सठ साल पहिने
किछु एहन सन
संरचना भेल
विद्वान, भद्र-जन भेला कात
मूर्ख लठैतक
वन्दना भेल
कर्तव्यक मात्र
बात रहल
अधिकार भेल निपत्ता
के छथि ई अन्वेषक
ई केहेन अभियंता

अप्पन के अपने
संहार करैत अछि
सहजतासँ नहि
किएक
किछुओ मोन
स्वीकार करैत अछि
41

दोसर गाल बढ़ायब

दुःख नहि होइत अछि
जखन कोनो आई ए एस कि
आई पी एस
कोनो बेईमान भ्रष्ट देशद्रोही
नेता-मंत्रीसँ
थापर खाइत अछि
दुःख नहि होइत अछि
जखन कोनो
कर्नल लेफ्टिनेंट
कोनो जवानकँ हिस्सा
खा पचा लैत अछि
दुःख नहि होइत अछि
जखन कोनो
देशद्रोही नेता, कैबिनट मंत्री
राष्ट्रपिता गांधीकँ
गरियबैत अछि
कारण हम सब गांधीकँ
मोन नहि
राख चाहैत छी
गाँधी जीक मृत्यु
आजाद भारतक
पहिल हिंसा छल तँ
शास्त्री जीक मृत्यु
पहिल षडयंत्र

इन्दिरा तक अबैत अबैत
तँ गाँधी जी बस
वोट की नोट लेल
कहाँ हुनक मार्गपर
चलबाक भेल प्रयास
गाँधीजीक चश्मा
कियो लऽ सकैत अछि
गाँधीजीक चरखा
कियो लऽ सकैत अछि
मुदा गाँधीजीकेँ गाल पायब
आसान नहि
एक गाल पर लागल चोट
छनमे बिसरि
दोसर गाल बढ़ायब
आसान नहि।

42
टूटि चुकल छी

हम सब
टूटि नहि रहल छी
टूटि चुकल छी
वैह टा करैत छी
जे सरकार चाहैत अछि
गाम घर दुनिया समाज
प्रेम-घृणा, लोक-लाज
लोक वेद टोल परिवार
रीति रिवाज पर्व तिहार
सब छूटि चुकल अछि
सत्ता वर्ग बुझैत अछि
हम सब किछ
एहेन बन्हनमे
बन्हि जाइत छी
जे तोड़ि नहि सकैत छी

मोह-माया हित-अहित
लोक-परलोक वाय-पित्त
छोड़ि नहि सकैत छी
एहेन ई शासन सत्ताक
गुप्त षड़यंत्र कि
हम सब आलासी , स्वार्थी
नपुंसक भेल जा रहल छी
कतहुँ कोनो
प्रतिरोधक आवज नहि
जँ अइछो तँ समवेत नहि
हजारों ,लाखो , करोड़ोक भीड़मे
सब एसकर
आ एसकर तँ वृहस्पतियो झूठ |

43
अहाँ नहि रुकि सकब

नहि जनैत छी अपन अधिकार
नहि माँगैत छी हम अहाँसँ न्याय
बस एतबै प्रार्थना अछि
हमर दोष बतौने जाऊ
जिनगी बड़ड छोट होइत छैक
सेहो नहि निश्चय
कखन मौत आत्मसात कऽ लेत
किछ बुझल नहि किछ देखल नहि
ओना तँ जीबाक इच्छा
तहिये मरि गेल
जहिया अस्वीकारलक अहाँक हृदय
हमर प्रेमातुर मोनकँ
मुदा उम्मीद अछि अहाँ लौटि आयब
समय नहि अछि
किछु छन रुकि कऽ
पाछु मुड़ि कऽ देखबाक
अहाँ व्यस्त छी

हमरा संग जिनगी बेकार
नहि करए चाहैत छी
हम बुझैत छी
नहि बुझैत अछि
जिनगीक पिपासा
लोक दुनियाँ समाज
हमर अहाँक विवशता
अहाँ नहि रुकि सकब
मुजरा के तानपर
वेश्याक गानपर
शराबक दुकानपर
अहाँ लौटि आयब
मिथिलाक आनपर
एहि टूटल मचानपर
ढलान लैत दलानपर
गामक सीमानपर।

44

हमरा चाही इलाज

कहैत अछि युवा राष्ट्रकेँ

बिगड़ल लोकतंत्र

यौ नेताजी

अहाँके चाही काज

हमरा चाही इलाज

बात कहू

बनत तँ बनत कोना

अहाँकेँ चाही स्वराज

हमर अछि सर्वसमाज

बात कहू

निभत तँ निभत कोना

भेल छलहुँ जखन स्वतंत्र

भेटल छलै जनताकेँ

उत्तम शिक्षा स्वास्थ्यक

नि:शुल्क सुविधा

जीवन तहियो कठिन छल

छल तखनो दुविधा

मुदा आस्था आ विश्वास

प्रेम, अपनत्व बनल छल

दूर रहितो लोक गाम-घर

लोक-वेदसँ जुड़ल छल

ग्रामीण की शहरी

शिक्षित लोक

संस्कारी होइत छल

आम जनताकेँ लेल

प्रतिष्ठित लोक

सरकारी होइत छल

किछुए दिन बाद मुदा

बजार तेना हावी भऽ गेल

शिक्षा, स्वास्थ्य की

लोकक जिनाइ भारी भऽ गेल

सत्ताकेँ रोकबाक चाही

मुदा से कहाँ भेल

अपने सबहक चरित्रहीनतासँ

सत्ता अपने खेल भऽ गेल

45

यत्र तत्र सर्वत्र

कष्ट होइत छैक

ककरा

आ किए होइत छैक

ककरा

बुझबाक चाही

आ समय ककरा

ककरा बुझा दैत छैक

आदमी आ आदमीमे

एतेक फर्क किए

एकटा लूटै छै दुनियाँ

एकटा लुटा दैत छैक

चुप रहैत छी तँ

आत्मा

कानि जाइत अछि

किछ बजा गेल तँ

जिनगी विपरीत

भऽ जाइत अछि

बिन बातेक लोक

बात बना दैत छैक

आब नहि साहस

नहि ओ पैरूख अछि बाँचल

यत्र तत्र सर्वत्र

चिंताक बर्छी अछि गाँथल

हाल ऐहनमे

कोनो इच्छा व्यथा

होइत छैक

नहि भरोस करू

कनियो

नहि विरोध करू

कनियो

जिनगीक किछु

एहने सन कथा

होइत छैक

46

जुनि करू खट-पट मोन भरियाइत अछि

जतैक सोचैत छी मोन ओतबे बौआइत अछि

कलम रुकि जाइत अछि

कविताक लीक टुटि जाइत अछि

मोनमे उठल भावना कऽ

लहर-गति रुकि जाइत अछि

जुनि करू खट-पट मोन भरियाइत अछि

कतेक जतनसँ लिखल दू पाँति आइ

दूनू पाँति वियोगक दू पोथी बुझाइत अछि

अहाँक शृंगारमे छलहुँ कखन लीन हम

ओहि समयकँ ताकमे राति बीति जाइत अछि

जुनि करू खट-पट मोन भरियाइत अछि

आपसक झंझट छल अपनहि सम्हारि लीतहुँ

कोना मोन मानलक सभ छोड़ि चल जाइत छी

छनहिमे तोड़ि मान -मर्यादाक सभ धनुष

विवेक छोड़ि बिना पूँछ पशु बनि जाइत छी

हमर अश्रु-पूर्ण आँखि बाट तकिते रहि जाइत अछि

जुनि करू खट-पट मोन भरियाइत अछि

देखू ई जीवन छै सुख दुःख केर संगम

सुखक अनुभूति बिना दुःखकँ नहि होइत अछि

एना जे मानव दुःखसँ पड़ाइत घूरत

जिनगीक बृह्त ज्ञान ओकरा कहाँ होइत अछि

भीजेबै तखन ना सूखत , सूखल तँ टटाइत अछि

जुनि करू खट-पट मोन भरियाइत अछि

लोके बदलै

साल बदलल

हाल बदलत

सोचैत तँ

सब साल छी

हम कि बदलब

लोके बदलै

ततबे लेल

बेहाल छी

नियमे नित्य

धँसि रहल छी

डेग डेगपर

फँसि रहल छी

बढल अछि क्लेष

भेटैत अछि उपदेश

सब कहैत अछि

हम की करबै

अपने ओझराएल

महाजाल छी

रामकँ पढलहुँ

कृष्ण के पढलहुँ

गीता बाइबिल

कुरान उलटलहुँ

सबतरि लीखल

एक्के भाषा

जीवन कि प्रकृति

ईश्वरक देल

अमूल्य धन

नष्ट करबा लेल

हम सब स्वयं

बनल महाकाल छी

48

मर्म बिसरि गेल छी

रोज किछु ने किछु

हेड़ाइत अछि

रोज किछु ने किछु

भेटैत अछि

जे हेड़ाएल

सेहो नहि अप्पन

जे भेटल

ओहो नहि अप्पन

मुदा एहि हेड़ेनाइ

आ भेटनाइमे

जे समय बीतैत अछि

से नितांत अप्पन

मुदा ओहो कतेक अप्पन

नीक बीतय

एहि से बेसी की चाहब

सहेजब की आ

सहेजि कऽ राखब की

तखन, नहि कनियो नहि

नहि भसियाल छी ?

नहि हेरायल छी ?

नहि भुतियाल छी ?

कहि कर्मक प्रतिफल

कर्म बिसरि गेल छी

साँस तँ चलैत अछि

जीवनक

मर्म बिसरि गेल छी

जतेक सहन करब

तकेक कष्ट भोगब

जनता जनार्दन जागू

प्रतिरोध प्रतिकार करू

व्यर्थक नहि व्यर्थ के

जय जयकार करू

इतिहास कलंकित हैत

जँ आबहुँ मोन रहब

दुनियाँ नहि पुछत जँ

अपने घरमे गौण रहब

मिथिला की मैथिल

ताधरि बचल रहत

जाबत जीबैत रहती

भाषा अप्प्र मैथिली

एतबा प्रयास होय जे

मातृभाषाक ज्योति

नहि क्षीण होय

हरेक मैथिल नेना बुझय

कि होइछ टिकला कोइली ।

49

एतबे अनुसंधान चाही

छूबि कऽ देखियौ

ई पाथर,पाथरे रहत

विरह, दुख, चिंता कि

सुख शान्ति सेहंताक

आखर नहि भऽ सकत

आब नहि कोनो अहिल्या

राम अहाँक प्रतीक्षामे

आब नहि कोनो सीताक रूचि वनवास कि

अग्नि परीक्षामे

आब नहि एहि दुनियाँकेँ

उचित-अनुचितक ज्ञान चाही

कोनो प्रयत्ने पैसा झहरै

बस एतबे अनुसंधान चाही |

50

आजुक दिनचर्या

आइ लिखू तँ लिखू कि मोन अछि उदास

भोरसँ साँझ धरि रहल अछि उपास

भोरे भोर वो कहलनि मुनियाँ परल अछि बीमार

देखेबैय नै डॉक्टरसँ करबैय नै कोनो उपचार

मनोहरकेँ सेहो देलकनि स्कूलसँ निकालि

पोथि नहि छन्हि, जेहो छलन्हि सेहो लेला फाड़ि

धिया पुता के नहि अछि अहाँकेँ कोनो परवाहि

मुदा भरि दिनमे पीयब दस बेर कऽ चाह

अहाँक संग मुश्किल अछि आब हमर निर्वाह

सम्हारू अप्पन घर द्वार बरू कऽ दियौ सुड्डाह

कहलियनि हुनका जे एतेक जुनि तमसाऊ अहाँ

भगवानपर भरोस कऽ भोजन-भात बनाऊ अहाँ

डॉक्टर साहबकेँ छी हम

तावत चूल्हापर एक बेर चाय चढाउ अहाँ

कहलन्हि ओ, हमरा संग जुनि करू बकवास

बुझलहुँ चललहुँ खेलेयबा लेल ताश

बड़ड धर्म केने छलहुँ, जे भेटल अहाँक संग

हे भगवान उठा लिअ पुरि गेल जिनगीक सब आस

हम कहलियन्हि यथार्थ मुदा

बुझलयन्हि ओ व्यंग्य एकरा

डेहरी पर ठाढ़ भऽ करए लगली झगड़ा

हाल हमर देखि मित्र सभ मुस्काइत छल

किछु ने बुझाइत छल

स्थिति अप्पन कहब ककरा

सत्ते हमरा सन लोकक

ई केहेन मजबूरी छैक

एक टा पाय नहि

हजार टा जरूरी छैक

51

पसरल बादल

देहक दर्द,मोन नहि बुझल

रहल मोहमे डुबल

सदिखन व्याकुल

सदिखन उलझल

आर कहाँ किछ सूझल

अपने करेजकेँ भुजि-भुजि खाय

की सीझल की पाकल

नोर नयनकेँ घोरि घोरि पीबी

रहल आत्मा प्यासल

एसगर सुतल रही पलंगपर

देखलहु सब किछु भीजल

दूर छिटकि गेल चान गगनसँ

सब तरि पसरल बादल

52

टघार

चिनवारसँ

टघरल पिठारक

टघार

जखन खूनक धार

बुझाए लागय

पडोसीक

आत्मघाती व्यवहारसँ

साकार

जखन अप्पन हार

बुझाय लागय

बजारसँ

कीनल उधारक

हथियार

जखन अप्न कपार

बुझाए लागय

बुझि लीअय

धर्म विलुप्त

भऽ रहल अछि

बिना धर्म

बगदादी कि ओसामा तँ संभव

मुदा असंभव अछि

विवेकानंद कि टैगोर भेटब।

53

थाह जिनगीक

टूटल डंटीक कपमे
राखल दू घोंट चाह
नहि जानि कखनसँ
सेरा रहल छल
जेना हमर जिनगी
एक घोंट चाह
जिनगीक थाह
54
आत्माक हनन

बसात पुरबा बहय
कि पछबा बहय
ई रुकि रुकि चलय कि
निरंतर चलय

घर हमर अहाँ तक
पहुँचैत कहाँ अछि
रोकि लैत अछि
बाटेमे
बड़का बड़का महल
जाहिमे
इमहरसँ उमहर
घुमरैत रहैत अछि
कहू करब की
लऽ कऽ ई भोर
जे रातुक अन्हारसँ
अछि बेसी कठोर
नहि गाएल जाएत प्राती
लागल अछि दाँती
बौक बताह बनल
बस टुक टुक तकैत छी
हँसि लिअय बाउ
आइ देखि हमर स्थिति
हम अहाँक भविष्य देखि
कानियो नहि पबैत छी ।
यौ उठि कऽ ठाढ होउ
देखियौ केहन इजोत छै
आबि रहल अछि
केकटा सुरुज चान अकास
ई आओत अपने आँगन
अपने मिथिलामे
देखब लिखत नव इतिहास
नव निर्माण क रूप रेखा
अछि बनि रहल सबहक मोनमे
जे एखन तक बनैत छल बाध बन कोनो
कोनमे
परदेशीक दंश
कतेक दिन सहन करत
पेटक ज्वालाक शांति लेल

कतेक दिन
आत्माक हनन करत ।

55
शांति बनल हाहाकार अछि

प्रीत तँ सब दिनसँ
स्वार्थक प्रतीक थिक ,
की निक की बेजाय
सब भाग्यक ट्रिक थिक
समयक संग सब किछु
सब दिन बदलैत रहल
रीति-रिवाज,पाप -धर्म
समयानुकुल बदलैत रहल
सब दिन लिखल गेल
निक-निक ग्रन्थ
सब दिन होइत रहला
एकसँ एक महान संत
तखन पाप कोना
एतेक बढ़ि गेल
सत्य चढ़ल फांसी
झूठ गद्दी चढ़ि गेल
अर्थतंत्रक चक्रव्यूहमे
हताश आदमी
बेहिसाब फँसैत गेल
सुख , संतुष्टि
आ सुरक्षाक आसमे
मौनक शांति बिसरि गेल
सुख कतऽ,सुख कथि के ?
देहकँ ,पेटकँ की मोनकँ
की क्षणिक सुख की सर्वकालिक
की धार्मिक की चमत्कारिक
संतुष्टि , ओह
जरूरीसँ जरूरी काज

नहि क पबैत छी
कहाँ छनो भरि लय
अप्पन आकलन करैत छी
सुरक्षाक बात तँ
केनाय आब बेकार अछि
घर बाहर आतंक मचल
शांति बनल हाहाकार अछि |

56

हमरा लेल : हम्मर गाम

गाँव आब हमरा लेल
वीरान भऽ गेल
हम्मर गाम हमरा लेल
मरि गेल
बाबा मुइला भेल सब काज
गामेमे
पिता मुइला भेल सब काज
गामेमे
मुदा दादी आ माँकेँ नहि गाम
देखा सकलहुँ
गामक माँटि पानिकेँ नहि
कर्ज चुका सकलहुँ
नहि बुझि
सकलहुँ कोना की भेल
मुदा सरिपहुँ गाम हम्मर
बहुत दूर छूटि गेल

(प्रस्तुति आशीष अनचिन्हार)

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

संतोष कुमार राय 'बटोही' दू-टा कविता

1.दलित छी हम

बेवस्था कँ मारल

सभ दिन सँ दुत्कारल

अखनो अछूत बनौने छथि-

दलित छी हम ।

डोम कहावति छी।

सूप-डगरी-कोनिया-चंगेरा,

डाला,मेघंबर आदि बनावति छी।

शिक्षा मे अखनो पिछड़ल छी।

चर्मकार छी हम।

मरलाहा माल-जाल कँ उठावति छी।

चामक कारोवार हमर

बनि गएल अछि जिनगी नरक।

रजक छी हम।

कपड़ा धोनै हमर काज

हगनी-मूतनी कँ बास सँ

नाक फाटि रहल अछि।

प्रहरी हम सभक

सभ रूपे पिछड़ल

दुसाध छी हम।

दलित छी हम।

कानून सँ की हेतै ?

किछु हमर दोख

किछु बेवस्था कें

किछु हमर लोकनि कें।

कतेक दिन धरि चलतै-

एना सुतला सँ

रास्ता देल जाउ

नीक सँ हमरो जीबअ दिअ ।

2.अबोध नेना

हँसि रहल अछि

खसि रहल अछि

कोमल काया छन्हि

छथि भाषाविहीन अबोध नेना ।

गिरैत-परैत चलैत छथि

हाथक इशारा सँ सभ किछु कहैत छथि

इ लेब,ओ लेब,सभ किछु लेब

सभ किछु हुनका चाहियैन्ह।

पी-पी लेताह

मम लेताह

सुगा,कौवा,पिल्ला आदि चाहियैन्ह

खाय लेल हुनका पहिने चाहियैन्ह ।

दूध-मिसरी हुनका चाहियैन्ह

ओ नहि खायब,इ खायब

घुमि-घुमि क' खेताह

खाय सँ बेसी छिड़ियेताह ।

नोर बहि रहल छन्हि

जिद्द केने छथि ओम्हर जायब

'पा,हुनकर जेम्हर गेलथिन्ह

इ नेना कैँ नहि पता 'पा' आब नहि औतैन्ह।

संतोष कुमार राय 'बटोही'

ग्राम-मंगरौना

पोस्ट-गोनौली

प्रखंड-अंधराठाढ़ी

अनुमंडल-झंझारपुर

जिला-मधुबनी

बिहार-847401

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारुदार'

झारू-
मान नै केकर मन मानै छै
केकर मन मानै अपमान।।
अपनाबू सभ जीव जगतकेँ
पूरत अहूँकेँ ई अरमान।।
गीत-
शिक्षाक बौछार लागल छै
घर-घर पढ़ाइ-लिखाइ छै।-2
बड़ी सरम केर बात आबो
लोकसँ लोक छुबाइ छै।।-2

केकर लहु केकरासँ कम छै
सभ लहुमे एके दम छै।-2
श्रद्धा और सिनेहमे सबहक
बड़बैर हक देखाइ छै।।-2

बड़ी...।

जेकरा नै जीवनक आधार
की बुझतै मानव अधिकार।-2
ऊँच नीचक हथियार उठा कऽ
जगसँ लड़ै लड़ाइ छै।।-2
बड़ी...।

मानवताक शासन मानू
सभ मानवकेँ बड़बैर जानु।-2
जीबैक हक छै सभकेँ बड़बैर
अन्धोकेँ ई देखाइ छै।-2
बड़ी...।
q

3.

झारू-
काल्हिकेँ के देखलकै बाबू
काल्हिक करिश्मा बड़ा महान।।
काल्हि हाथमे हेतै खप्पर
आ की करब अहाँ कंचन दान।।
गीत-
आब की कड़ी हम
सामने खड़ा सवाल छै।-2
जीनगी भेल दबाल छै ना।।-2

जँ फँसि जाइ छै ई मशला
की करबै होइ नै फैसला।-2

ऐ सँ वंचित नै कियो
राजा रंक कंगाल छै।
जी...।

भेटल समयसँ नै जवाब
कल्लर बनि जाइ छै नबाब।-2
या खोजि गलत हल
जीनगी करै हलाल छै।
जी...।

हल लालच केलक सवाल
जिनगी फँसि गेल ओझड़ी जाल।-2
आब के छोड़तै
केकरो कहाँ मजाल छै।-2
जी...।

उत्तर समय चाहै छै कम
जीयब या की घेरत जम
रक्षा करू विधाता
मौत जिनगी के सवाल छै।
जी...।

खोजै समय रहैत सच उत्तर
बिरला छै जगमे ई पुत्तर।
दुख से पाबै,
जिनगी तेकर बबाल छै।
जी...।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

रामविलास साहु- किछु टनका

ज्ञानक खान
समाजक दर्पण
साहित्य अछि
अमृतक खजाना
पढ़ि बनू विद्वान

श्रेष्ठ साहित्य
सागरसँ गहींर
गोंता लगाऊ
जिनगी बदलत
भेटत आत्म ज्ञान

भाषा ज्ञानक
जननी कर्मभूमि
देशक मान
जनगण कल्याण
विकासक निर्माण

मधुर भाषा
सभक मन जीत
उच्च आसन
सम्मान दियाबैए
दुखसँ बँचबैए

मनक मैल
विचार बदलैए
समाज देश
दुनूकेँ बिगाड़ैए
मन रोग बढ़ा कऽ

मनक मैल
छबिकेँ बिगाड़ैए
जनहित नै
स्वार्थी बनबैए

कुबाट चलबैए

अमृत वाणी
जनहित करैए
नदीक पानि
शीतल, नहि हानि
पोखैर राखै मान

जन्मदातासँ
पालनकर्त्ता पैघ
मारैबलासँ
बँचबैबला श्रेष्ठ
जन्मभूमिसँ के छी?

माता कुमाता
कहियो ने होइए
पिता पुत्रक
हत्यारा नै होइए
कहै छैथ विद्वान

कर्मयोगीकेँ
भोगी निर्वल कहि
जोंक बनि कऽ
हकमारी करैए
उन्टे नर्क भेजैए

श्रमशीलकेँ
लोक हीन बुझैए
हिस्सा लूटि कऽ
भोगी जोगी खाइए
स्वार्थ सिद्ध करैए

परिश्रमक
मोल अनमोल छै

नै बिकै तौल
जे जानैए ई मोल
से जन ज्ञानी होय

दुख सहैले
गरीब जनमैए
सुख भोगैले
भोगी ठग महंथ
तियागी संत अछि

असल सन्त
जनहित करैए
सुर, तुलसी
कबीर, रैयदास
चारू युगक दास

सत्यक वाणि
नै होइए उवाणि
हेतै कुवाणि
धर्मकेँ हेतै हानि
बढ़ि जेतै अज्ञान

बाट बटोही
संग मिलि चलैए
एक थकैए
दोसर अछि थीर
के होइए अधीर

चोर कहियो
इजोत नै सहैए
भोगी कहियो
दुख नहि सकैए
के भोगत ई दुख?

मनक शान्ति
साहित्यसँ भेटैए
राष्ट्र निर्माण
समाज कल्याण-ले
ज्ञानी बाँटैए ज्ञान

असल प्रेम
साहित्यसँ करियौ
ज्ञान बढ़त
समाज सुधरत
सुख शान्ति भेटत

बिनु बजने
लोक बुझत केना
जँ बाजै छी तँ
होइए नकीहानि
उन्टे जाइए जान

बरसु मेघ
एहि बाग-बोनमे
पानिक त्रास
बेसी बनि गेल-ए
खेत सुखि जरैए

रूसल मेघ
मन नहि मानए
मानत केना
जखैन बरसत
तखने ने बिश्वास

मेध देख
मन हरिया गेल
जे गरजत

से बरसत नहि
केना बँचत प्राण

जे गरजैए
से नहि बरसैए
चुप्पे रहने
खेत बाग जरैए
प्यासे लोक मरैए

लोक कहैए
इंसान पत्थरसँ
कम नै अछि
अखनो तँ विवेक
बुझू मरले अछि

कहै लेल तँ
विवेक मरल-ए
मुदा कठोर
इंसान जगलासँ
आतंक तँ बढ़ैए

किए इंसान
लूट हत्या करैए
रावण कंस
बनि खून पीबैए
इमान की कहैए?

एते निष्ठुर
मनुख किए भेल
दुश्मन बनि
मनुखे मनुखक
हत्यारा बनि गेल

धरती डोलि
कानि-कानि कहैए
सभ डरल
सामन्तक जड़िमे
आतंक जनमल

जवाब देतै
सहए तँ दोषी छै
चुप्पी सधने
मुँह सीने रहै छै
दीन दुख सहै छै

जे जनमल
एक दिन मरत
किए होइए
लोभी स्वीर्थे अधीर
जगत अछि धीर

सोच बदैल
नेक इंसान बनु
घिनौना काज
छोड़ि कल्याण करू
हेतै नव निर्माण

सत्यक बाट
चलए जँ इंसान
आगू बढ़ैत
आगि नहि पकत
नहि पानि सड़त

कर्मकेँ छोड़ि
लोक धर्म खोजैए
भवलोकमे
भगवान खोजैए
नर्क भोग भोगैए

हारल दिल
थाकल तन मन
अकैर गेल
जिनगी अगहए
जगत छुटि गेल

मनक मैल
नै छुटल तीर्थसँ
स्वर्ग खोजैमे
मरणासन भेल
कर्त्तव्यक खेलमे

मोह बन्धन
फँसि वौआए गेलौं
बाट भुलि कऽ
लक्ष्यहीन बनलौं
आडम्बर देख कऽ

ठगक मेला
पाखण्डीक दोकान
सज्जन जन
पाप कीनै-बेचैए
पुण्य-पापक खान

अपन बात
लोक दाबि रखैए
अपन दुख
अपनेसँ सिरैज

ओझरा कऽ मरैए

स्वर्ग कहि कऽ
गामकेँ लजबैए
नहि सुविधा
सड़क बिजलीक
खेती पछारू अछि

गाम छोड़ि कऽ
परदेशिया बनि
खटैए लोक
गाममे नै उद्योग
पेटक समस्या-ए

सभक पेट
भरैबला मरैए
भुखले पेट
धिया-पुता बिलैट
अनाथ बनल-ए

कहै लेल तँ
रीढ़ अछि किसान
मुदा जीवन
देखू बेवस्था खेल
खेती चौपट्ट भेल

उत्तम खेती
कहैबला नै कियो
साधनहीन
खेतीक काज भारी
माथ पीटै किसान

मरि जीबि कऽ
किसान खेती करै
खा गेल रौदी
धिया-पुता कनैए
भुखै साँझ-विहान

केना बँचत
इज्जत आ आबरू
नहि सुरक्षा
दिन अपहरण
राति हत्या होइए

देश अजाद
मुदा खेती उद्योग
नै सुधरल
नै भेटल सुविद्या
की करत विधाता

गामक गाम
खाए सुते बलान
बालुक ढेर
उड़बै आसमान
केना बँचत प्राण

कोसी बलान
कमलामे उफान
एलै तूफान
भँसिया गेल गाम
मरल स्वाभिमान

विकराल छै
कोसीक बाढ़ि-पानि
पेटे समेलै

गाम-घर-दलान
लाखक गेल जान

कोसी त्रासदी
विकराल निर्मम
तांडव नृत्य
महाकाल बनल
धोइ पोछि खेलक

लूटेरा सभ
मिलि माल खेलक
शोषण हत्या
नारीजनकेँ भेल
बच्चा दहए गेल

धनक क्षति
जनक मति गेल
देखैबला नै
डुमि मरल बच्चा
गाम भेल निपत्ता

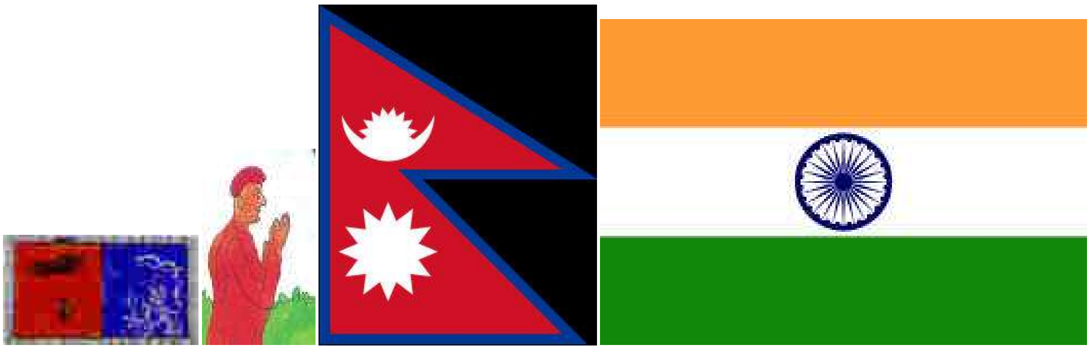
प्रकृति कहि
चेतबैए लोककेँ
अचरज नै
प्रदूषित धरती
जहर उगलैए

देख प्रकृति
चेतावनी दइए
धरती पानि
हवा प्रदूषित भऽ
संकट छै जीवक

पावस रीतु

अमाबस राति छी
मेघ बरसै
बाढ़िमे डुमैत छी
के बँचेतै हमरा

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।



वि दे ह *विदेह Videha বিদেহ* ***http://www.videha.co.in*** *विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal* রিদেহ প্রথম মৌথিনী পাক্ষিক ঙ্গ পত্রিকা **'विदेह' २६७ म अंक ०१ फरबरी २०१९ (वर्ष १२ मास १३४ अंक २६७)**